# **मृ**जीजश्याम।

---

WATE.

बिडमिटनगर्छ भूतापाइन र

बिबिङ्गभनीनाम् नामक अन

नाना निव लोखीय गांध जायात अगुद्रापि हरक

विह्या १रेश

है पानी १

रुं विकास

**可可以加强的股份的** 

विषयंत्राक नामका

Firmit Walls

### স্টাল্ড ।

🎒 मंडीत कृष्णे विरुद्धित 🥠 💮	3
बीमजीत क्षकि पृथीत क्षरताथ अधीमजीत मुक्	₹.३
্বলিভার সৃষ্টি শ্রীমন্তীর কথোপকথন	, <b>a</b>
বসত আগমন ও বসভ ভৎ সনা	<b>छ</b> नाः ৮
ु छे खर्तेत स्रित्रधन 🎎	6
্উন্ধবের সহিত হুলারি কথে।প্নথন	\$2
্রন্দার প্রতি উদ্ধবের উক্তি	78
্রন্দরি মধুরায় গমন	28
্ট্রব্রিবীর্নুহিত হন্দার কথে প্রকর্পণ 🦠 🗥 🗥	34
्र्युन्तित्रै मधुर्विभूतौ अटवम ''''	575
🎒 कृत्कत निकटि देग्मात खटकत मःवान कथन 🔑	, <del>२</del> ०
্ট্রীরুক্তের খেদ এবং শ্রীরুক্তের প্রতিরুদ্ধরভং সন।	२१;२३
बुक्पाति अधिक कि कुरकात छे छि	₹₫:
শ্ৰীক্ষকেৰ প্ৰতি ৰুদ্দার পুনরুক্তি """	ં રૂષ્ટ
क्कांत गरिक भूतवांत्रिगीत क्या	Pip
জ্ঞারের প্রতি দুখীর ভর্মনা	₹ क
উদ্ধবের সহিত রুন্দার কথোপকথন	37
রন্দার প্রতি উদ্ধনের উক্তি	υ×
ঞ্জিক্তের প্রতি হুলার উজি	ತಿತಿ
রুলার এতি ক্রীক্রকের উব্বি	<b>3</b> \$
জীক্ষের প্রতি রুদার পুনক্সজি	- ప్ర
विकास अधि इन्मान अध्य गरिवात कथा	ာရ
बिहरकत अहि उ कुकांत्र कर्याशकशन	なや
हरूरका अफि उपात भूमा कथन	80
प्रकार बाल में प्राक्तन	ન્ કુંચ્
मर्थि मिट्राक्ट (बेट्राक्ट्रिक)	85
जिल्ला विस्कृति अधि वीमजीत छेल	84
कर नगराः।	8.9

# मृठीमश्वाम i

#### -----

ভাষ ব্রীমন্তীর ব্রীক্লণ্ড বিচ্ছেদ।
রাগিণী ইমন। তাল আড়া।
ওছে দয়াময় স্থাম নিদয় হইয়ে কোথা রইলো
গুণবাম। পদাশ্রের দিয়ে হরি। কি দোধেতে
প্রিহরি, জুঃধিনীয়ে হলে বামণ গ্রা।

श्रात । निकृत्क्षत्क अदः जिन्द्यभिता आमिकी । मतन मतन क्षितिएकम जिल्ला मृत् कि ॥ देकियरधा श्रीताधात रमथ व्यावित्र अर्गलका मुक्क्मिना भरण धन्तीरक। निकटिएक क्षित्रमधी রুক্ষা দুতী ছিল। অঞ্চ প্রশিবে ভাবে হৈতনা করিল। ধরা লৈতে ধরাধারি কড়িয়া ভূলিল। স্বিন্তে জ্ঞীনভীব প্রতিক্লিক্স সিল। আচ্মিতে মূক্ত পেন হলে কসলিনী। ক্রেক্তরেছে অপ্ৰান ৰণ ভাই কুনি। এত বলি কঞ্চলতে বদৰী মুছায় 🎼 প্ৰোধ নপ্ৰনতে ভূতী রাধারে পুলায় ১ এমনি করে রাই , লো হবি পাগলিনী। বৈষ্যধ্ব গ্ৰেক লোকে বলে কল দ্বিপ্ৰী ह कीत निर्ध कवाका क्षित्रः श्रीष्ठ की। मृङ्खाद कवि**ष्ट्र र श**ि-ल हीत व्यक्ति। अहम पूर्वी हरून बार कर प्रमाणन। युक्तिनाम শ্যাম বিনা রাধারি মবণ। দে ত্রিভক্ত বিনা অক্স কে জুডাবে নার। রাধানাথ বিনা সখি কে মাছে রাধার। তপন বিহনে, ্টিমন নলিনীব গতি। চাদ বিনা চকোরীর যে জাপ ছুর্গতি 🕸 ৰল বিনা, কভক্ষণ বাঁতে গোলকরী। সইৰ প্তৰ্শশাৰে পভেছে কিলে বী॥ পৃথিব। না দিলে সাইছঃ থিনী দেখিয়ে 🛊 शांश सर्देश आ॰ याटक किटमन नाविदया कि बात साबिद्ध মান কুংখিনী বাধার। কে সতে এ সব জ্বালা কেশবেরি ভার 🕷 কার কাছে মান করে বাড়াইব মান। কে তার জো পারে বরে রাথিবে সমান । রাধাকান্ত বিনা সাভাবল বে করিছে [ 存 ]

ইরি হরি পাব আরি নৈ দিন কি হবে॥ মরি মরি তাহে বে
নাহি সহচ্রী। এ সময় ইদি দেখা দেন সেই হরি॥ নি।
বিধাতা বাদ সাধিলে আমারে। সাধনের ধনদিলে সে পদে
করে॥ পরের প্রেক্তে মর্কে পর হৈল হরি। পাপ প্র
বুঝে নাগোতবু কেন্দে সরি। যে জন কান্দালে সরা য
ভরে কান্দি। সে জন না মনে করে বিধির কি বিধি॥ পা
মন অনুক্ষণ সে রূপ ধেয়ায়। রুক্ত গেল ভরু রুক্তবাদ না
যায়॥ শ্রীরুক্ত বিজ্ঞেদানলে দ্র্য হতে নারি। কি ভি।
করি এবে বল সহচ্রী॥ বিপ্রেক্তর বাল্যাণ গারে না
সায়। কালা গেল কলক্ষিণী নাম কেন কয়॥ মরে প্র
অপ্যান সহিতে না পারি। মনে ইচ্ছা করি আত্মণতি হব
মরি। মনে করি পুনঃ আ্লাগ্রিত মহা পাপ। কেউ থেন বদ
প্যারী ভাজ মনস্ভাপ। রাগনেণ্য দ্য়া কর স্থিতে দীনেরে
ভামি হে ভ্রজান ভ্রিত না চিনি ভোনাবে।

জীমতীৰ এতি দুতীৰ প্ৰবোধ। লাগিনী খাম্বাজ। তাল মধ্যমনি '

জ্ঞীরাধে গো এখন কি হবে ভাবিজে। কাবনা উচিত ছিল মিলেছিলে বে কালে। সে ধাদ তোমার হভো, এ যন্ত্রণা নাহি দিত, বিজ্ঞেদ না করে যেতো, ফেলে ভোনায় অকুলে। ধ্রণ।

ত্রপদী। শ্রীমতীর বাকা গুনি, কহিছে রুদা রিলণী, গুণো পারী স্বৰূপ কহিলে। বৈর্গ্য ভোবে বাদ্ধ প্রাণ, জ্যাজা কর অভিমান, কি হটবে উত্তলা হটলে। হরি জনা রাই ভোরে, বুঝায়েছি বানে বানে কালো কপ হেরনা নগনে কালার অন্তর কাল, নিধিমতে জান ভাল, তবু কাল। ভাব স্থানে মনে। বাকার যে বজিমতা, কুটিলের কুটিলতা, ঘরি কিলু সংসদে থাকিলে। অলারের মলিনত্ব, কডু না পার জনায়াত্ব, শতবার ধৌত করিলে। কুল মান সন্থ্নায়, গঁলি-ধি বার পায়, যার জনো হলে কালালিনী। সে কডু মা

ভাবে ভোবে, তুমি ভাব তার তরে, অপৰূপ একি কথা শুদ্দি বে কালানিদয় অভি, নাহি তার ধর্মভীতি, স্ত্রীহত্যাদি ভার-না রাথে না । নরা ধর্মা তার যত, নকলিত আছে খ্যাত, বা-ল্যকালে বধিলে পুভন।। স্থীরুক্তের ব্যবহার। দেখে লাও। हम ८ कात, निधि वृक्ति भावादन शिंटिन। नम्म देश्न क्राया তবু বাধে সে গোবিন্দ, বারেক গোকুলে নাহি এল। হাহ। क्रस्क कृष्क वटन, जारम तांनी कांशिकटन, त्मानार्नरन बाहरम मशन: श्रामनी धनली गाउँ छितियान शक्ति माइ छेट्याकात করিছে রোদন। ই দায়াদি স্থা স্বৰ হারা স্বে যেন শব্দ नथा शैरन नरत बरहरून। পভিয়া প্রেমের ফাঁলে,ভার ख्टेमा भरत काटण, भरका भरन करत मा कथन। काई यानि कम-लिनी, तरुन इ ७ लेखानिनी, हकता इडेटण किया इटर। विधा-তা ভোষারে বাম, নৈলে কেন যাবে খাম, কলঙ্কিণী নাম किन तरन ॥ क्षानिरामद क्षत्र यक नकलिक सूर्विन्छ, रक्षांत्र পক্ষে যভ বনমানী। কোরে মিছে আনা দিয়ে র্থা যামিনী लाशाहर, विरुद्धि नात उत्तावनी । क्रक निका गृष्टि कति। ्न गाँउ किया पति, यथार्थ विलय्ड मात्र माहे। **ख्रीक्रासम्ब** यदम मन, शादक राम याश्चम क्रुक्तशेदम उद्दे जिका हाई।

श्रीमणीत शृक्ती।

রাগিণী খাষাজ। তাল মধামান। কোথা রহিলে দয়ামর ছঃখের সময়ে। এ বিপুজ্ঞে মধুস্থান পেনা দেওতে কামিয়ে। প্রাণ সঁলোহে ভোষায়, অনুভাপে প্রাণ যায়, ভেবে ভেকে দেখ মন কালি হলো কালিয়ে। ধ্রু।

প্রার। রাধা বলে ওগো রুদ্ধে কি কথা কছিলে। আছি কি সে প্রাণ হরি আসিবে না গোকুলে। তবে সই কেন রুদ্ধ ত্হ পিঞ্জেরতে। কুক বলে কাঁপ দিব যমনা জলেতে। কুক্ শ্না কুঞ্জে আর থাকিকিন্ত্রতে। কার মুখ চেয়ের্থ প্রজের নাকেতে। এ যাতনা হতে গ্রহী ভালত ন্রব।

প্রাণ ধরা জীয়ন্তে মরণ॥ এত বলি রাই মনে আকাশ ভা-विहा। नथी कांत्र वर्गका शटफ मूक्त्। हता। लामसीन নম্নেতে বহে প্রেমবারি। চিত্র পুরেলিকা প্রায় রহিলেন भारते। विन्यू विन्यू प्रमा भनी वमत्मरू वह । गयान निश्वान বহে আচেতনে রয়। প্রমাদ দেখিয়ে রুন্দা হইল ভাবিতা। **रुमकाल सिकूर** छाउँ जाहेल लाला । कि शला कि शला বলি রুম্পেরে সুধায়। ইতিমধ্যে জ্ঞীমতীর কি ভাব উদয়। इन्मा नरल थिय मधि जिल्लाम कि खात । नुकारन मा वृद्ध রাই কি করি ইহার। ক্লফ কণা প্রদক্ষেতে ছিলাম দুজনে। नम्म रुनिल शावी क्रफ कथा खान। हिक्ट टेंड बा रुख्छान হারাইয়ে। কোথা রুক কুক বলে পড়ে মৃচ্চে: হয়ে। ভাল স্থালা হলে। স্থী কি করি উপায়। বংশীবারী বিনা কিনে বাঁচাই রাধায় ! পিলকে পলকে রাধা প্রমাদ ঘটার। দেখে **छत्र श्रा**त हर कि **का**नि कि इह ॥ अमन करेथरी गर्शी हर दि কামিনী। সে কেন পিরীতে মজেহয় পরাধীন । আগু পাছ **डाविता कर्ड्या कर्या** करा। जाना ग्राम श्राप्त मधी घरते अहे ধারা। জ্বালার উপরে জ্বালা সহিতে না পারি। সময় পেঙে রক্ষ করে বঞ্চিনী কিশোরী। ত্রিভঙ্গ বিহনে অঞ্জ একেত জ্বলিছে। তাতে সই কমলিনী আছতি দিতেছে। বুঞ্চিত্ন कछ मछ द्रात्रान। द्विरत। नम्ड विद्रान दश्च नश्च मनिर्श्य। শুনিয়া রুক্ষার কথা ললিতা সুক্ষরী। গদ গদ ভাবে কংহ हरक दर्श वावि ॥ जामारनद कि धन जारह क्रसः धन विता। কি ৰূপে বাঁচিলোছ য়ে বিহীন সে ধনে। যে ৰূপ দশতে ষ্ঠাম ফেলেছেন সখি। কুলবালা কেমনেতে বাঁচে বল ্রতি।। ওচে কুফ তব্দাম শুনি দ্য়ামর। তবে কেন এ कर्महर् क प्रमाना रहा।

প্রথ ললিতার সহিত জীমতীর কথোপকথন।
রাগিনী জয়জয়ন্তী। তাল ধ্রথা।

🖟 👼 🎮 জিমান কে সবে কেশব বিনে: ছুফাৰ বিরহ

স্থালায় কে করিবে ত্রাণ। ওগো সহচরী, তাই ভেবে মরি, কি দোধে তাজিলেন স্থাম, এই থেদ প্রাণ সঁপে পদেন। পাইলাম স্থান।। ধ্রু॥

PR शत : कर अक विवास ताथा टेंड कमा शाहित । मृत्रु अदत ললিতার প্রতি জি**জাসয়ে।। ক**হু কহু কুল্ব কথা ও**লো সহ**-हती।। क्रक दिन। (भट्ट ब्यांप किटम ब्यांप धित। कारत कर ब এ**তি**না কে যুচাবে ভারি।। যে পারে নে পারে সেতে**। রৈল** প্রেপ্রি : কুল যান মন প্রে গলীপলাম হার ! সে **জন ব**-ঞ্জা করে রহে মগুরায় ৮ কায় হায় চন্দ্দের এছ গুণ আছে ্কমনে এমন জনে ভুল¦যে রেখেছে।। ললিত। বংলন শুন ও রাজকুমারী। গংগে কি কুজার বশ সমেছেন হরি।। আ-পান যেমন বিকা ত্রিভঙ্গ মূবতি : রাবী ভেনি পাটবজ্ঞ কুবু**জা** ্রভী ।) খারে পারে বনে গেটছ বঁ/কায় বাঁকার। ক**ভু** কি**গো** बिन इस व कि.व त्मांक(४।। कृत् जो **कश्टमत भागी काटन मक**-লেতে। রাণী হনো কমলিনী খাল কলালেতেনা করি ভাগ্য বিনি কারে দেন কমলিনী। সুনি হলে কাজালিনী সেই ুহুল বাণী। সকল রুপেনে ইচ্ছা কি ছবে ভাবিলে। সাধ্য কিলে। কমলিনী করেগো কপালে। তুমি বল গ্রাম **আমায়** ভুলিয়া রয়েছে। সাধে কি ভুলেছে ভালের সে দিন কি আছে। কংস ধ্বাস করি ছত্র শেন্তে তাব শিলে। তৃপত্তি হয়েছে নাম পৃথিবী ভিতরে। স্থথ সৌবতেতে দৰি গোহিত 🗐 ছরি। তাবে কি রাথালি ভার দাকে গো কিশোরী।। মধুর ভাবেতে অজের ভাব মিশারেছে। তব পক্ষে ক্ষাপক করিয়াছে।। পিরীতের এই সুখ ও রাজনম্মিনী। 'পরের ছত্ত্রে প্রাল' কোনের দিবস রজনী। পরেদ**ও সুখের** কপালে দেহ ছাই। প্ৰেতে খপন হয় এবড় বাস্টি।। এছ বলি ললিতা চলিল নিজ স্থানে । পুর্বাগত কমলিনী বহিলেন भोरतः।। 🛍 कृत्यः त्र शामाञ्चरक् मक्तम्म स्थारमः। मन **पानि** রম যেন সদত পিয়াসে ॥

## বসন্ত আগম্ন (

- রাগিণী বাহার। ভাল ভিওট।

সই কি হবে এলো শৃত্ বসন্ত। বিনা স্থাম রাধারে কে করে সান্ত। ইধর্মাছীনা হলেই প্রাণে, অঙ্গনর অনক বাংগ, প্রবোধে প্রবোধ না মানে, প্রাণ কে জুড়ার বিনে রাধানাত।। গ্রা।

ত্রিপদী। হেনকালে নিকুঞ্জেতে, গিকবর আনন্দেতে, পঞ্চস্ববে গাম নিজ গান। কোকিলের ফুত্গান, যেন বিঘ-সাখা বাণ, শুনে মুলে বিবহীন প্রাণ ।। শিহ্রিয়া হরি প্রিয়া, कतिरम विषाम कशाः, भीटव> इत्कटत क्षांत । अरुना पूर्की खन खन, क्लांकिन कि बदल खन, जानि (कदन क्रुक्ष भून भाषा। কুষ্ণ গেছে যে অন্ধি, পিক্রর দে অব্নি, নির্ব হইট্র ছিল শ্বী। প্রেমনিকে আজি কেন, প্রকাশে গো নিজ গুণ, গুণ্ম চাঁদ ত্রকে এলোনাকি।। নৃত্যকরে বাম ক্রাখি, ছেনো দেখ প্রাণস্থি, নানা মতে দেখি গো মঙ্গল। এমন দিন কি আর ছবে, সে ছরি আমার হবে, অমঙ্গলে হবে কি মঙ্গল।। যে निरंग कि बादे का थि। प्राची (यस वाँका काँ भि। वादम दमा-ছন চূড়া গে। হেলেছে। অন্তরে বাহিরে কালা, একি আর इंटना खोला, कांगा छात्र याङना मिटकट एः क करत मनन শুষ্তে, ত্রজে নাই রাধাকান্ত, মদনেরে কি বলে ফিরাব : অঞ্চ হীনে অঙ্গদয়, একি দখী প্রাণে সম্ব, তুঃসহ যাতনা কত সব॥ **बिक्रारक**त विष्क्रिकां नत्न, मन्त्रा करत धावन, मन्य मन्य वरह সমীরণ। গুঞ্জরতে নিরস্কর, মোহিত করে মধুকর, রুঞ্ বিনা এতেক লাজুন।। হাছা কুল্ড কোথা গেলে, এমন বিপদ কালে, কে আর ভারিবে ভোন। বিনে। ছরস্ত রাজার দারঃ <ध्यमप्राट्य थान यात्र, ७१०क करत पिरल शक्षकरम ॥ ताका (मट्थे ताक) शीन, अङ्गताक निमि मिन, निट्ठ किया आटह দুর্কক্ষ। চোরের উপরে চুরি, করে ওচে বংশীধারী, রাধা बांका कामादक कर्नन ॥ कांका कर्म क्षितित, कूटन देतर्ग रेतर्यायतः किता विराप्त करिया कुरखरक। कुर्तरम शर्फ्रकि ২রি, কে ভারিবে হরি হরি, তুবে মরি বিরহ শীরেতে 🛭 कार्षि यमि आर्प भति, लाइक्टच विलय्त इति, भाति रेम्ल কৃষ্ণ বিগ্ৰেছে। দয়াময় লজ্জা পাবে, লোকেতে অ্যুশ शांदर, त्मरे लच्छा श्राक्ट मरमण्डा कारलीत कि करे भाता, কাল ৰূপ ধরে যার।, কামিনীর ক্ষতান্ত সমান। ভাই বুঝি পিকবর, লঙ্গদহে নিরস্তর, যুত্যু হু করে কুহ গান। অধি-मीरत क्षेत्र जाना, मिरन क हिन्दकाना, जीवारन क नारन জুংখ।নতে। এ জন্মের মত রাধে বিদায় হৈল ভব পাদে, অমু-কুল হৈও অন্তক্তে।। এতবলি কমলিনী, হয়ে মেন উন্মা-भिनी, विद्युषी अल्पात अपात। अल्या प्रकी वल नल, की-থায় মণুবাবল, ক্লম্ভ দলি গিয়ে মহারার দ কেন মিছে কান্দে মরি, অমিরা অবম নাতী, মলুবাত বছ দুর নর। সক-লে একতা হয়ে, হেরি গিয়া শাম্মবাদে, জ্বডাইব ভাপিত क नम्र।। ए नारक एक किवा जा, कुन न अब्ह, राव शाम, यक्त করেছি সমর্পণ। ক্রান্ত দরশনে বাব, ভাপিত প্রাণ জুড়াইব। शास्त्र (न! श्वित्त मक्कान ॥ त्रमा वटन कि द्वारम, वित्र-হিনী হলে বলে, মান অপ্যা**ন আ**বি লাই। কেমনে যা**ইব** প্যারী, দারেতে আছয়ে ডারী,পাছে তারা মক্ত সলে রাই 🛊 विटक्ट्रिएट पश्च आने, हैर्स्य मधी अलगान, इस्य आने माहि-ক বাঁচিতে। তৃষ্ণিতে। সামান্যা নও; রাজার নন্দিনী হও, আপনার যান কি হারাবে।। যা থাকে ক্লেন্ড মনে, তাই एरव रुष्ठेक रगरन, अ पिन कि छिविषित इरव । क्रूक्टक्श छात्र মধ্যু মন রাখ সে চরগে, মনোবাঞ্জা অবশ্য প্রিবে ॥

> অথ বসস্ত ভৎ সনা। রাগিণী বাহার। তাল ভিওট।

পুড়ে মরে গোমদন মলোনা। তাহলে বিরহীর ভাগ্যে হতো কি যম্ভণা। রাজ। যেমন স্থপাত্ত, ডেসি শিষ্ঠ শান্ত পাত্র, বিচার দৈথে জ্লেশ্বায় গাত্র, হর । নেত্র হৈলে পুরাই কামনা। ধ্রু॥

প্रयात । जटेजरमाध्यात्रेकावरण यमद्रय रमिश्रदा वार्थादत স্থায় চিত্রা চিত্রে ভয় পেয়ে।। ওগো ওগো রাজবালা কি-সের কারণে। উদ্দিত এ ঋতুবাজ শ্বা কৃঞ্জবনে।। প্রাণ যে क्ष्मिन करत माध्य छेम्ट्स । माध्य नाहिक खंटल अ सूथ नम-ষে।। নির্দিয় কামের হাতে কিলে জ্রাণ পাব। যৌবন রক্তন স্থি কারে সম্পির। কোন সুখে ঋড়রাক এ এজ ভূবনে। দহিতে গোপীর অঙ্গে পঞ্চবাধ হানে।। রাজাতে প্রজার पुःथं ভাবে मः मन्दर्छ। धिक धिक नाम कर्न धनम ब्रांटकाटल কম্ম লাহি দেখি তেন নির্দ্ধি ভূপতি। অবিচারে দশু করে কামিনীর প্রতি।। রাজ্যবন্ধ জ্ঞান ধার তিলেন্ডরে নাই। সে পায় ভূপতি ভার এ বড় নালাই।। হর কোপানলে পুড়ে মরেও মলোনা। তা চইলে বিরহীর হতোকি ধন্ত্র।।। বিধি यमि मन्द्र इत रन भिरुष्ठ शाहे। एक्यनि कतिया श्रनः समरम পোছाই।। विवदी जत्मतः त्यमन प्रश्ने करत काम। जात कि কহিব ভাবে খুচে যাকু নাম।। চুর ছরে কোন্চিলে কালের ৰা**ড়ী** যাও। অবিল**মে কিরাতে**র জালে বন্ধ হও। খালার **উপরে কেন করছালাতন। মথুবার পথ কিরে চিন না তুর্জন** জ্বলারে আকৃপ্রবরেনে। নিরপ্র। ক্ষমা কর চরণেতে ধরি পিক্ষর নারি আন নহিতে তেংদের অভ্যাচার ৷ প্রেমানলে আৰু জলে খালাস্নেরে আব। যে শুনিলে সুখী হবে জুড়াবে অন্তর। শুনাগে মপুর গান তারে পিকবর ॥ কুজা। क्रूटकत अथन मिस्यी क्राइट्ड। त्रांधाताटका वनमाली कला-😂 লি দেছে। বাঁকা রাণী রাণীর প্রেমেতে বাঁধা ছরি। বিক'রেছে বাঁকার পায় বাঁকা বংশীগারী॥ মনঃ সুথে কথী সেতো সদ নিটবর। মুখীজনে সুখীকর সুখের উপর জাত্তকেনে কাটা ঘার লুন দেওয়া মিচে। আমাদের সুখ নিক্ষিকে বিধি হরেছে।। হলে বলে গেছে ব্রজাকনার কে

मिन । সমভাবে লোকের कि चौमें हित्रिन ।। अनाथी कहिया ব্রজনাথ ছেড়ে গেছে। মরিলে জুড়ায় প্রাণ মুত্রা নাহি আছে।। কি সুখেতে কেঁচে আছি না পারি বৃথিতে। এ ছেন জালাতে প্রাণ না চায় যাইতে। চিরজীবা আমাদের বিধি কি করেছে। তা না হলে কৃষ্ণ বিনা প্রাণ বেঁচে আছে এতেক বলিয়া চিত্র বিশ্ব বদনে। **জী**মভীরে ব্রাইছে প্র-(वाथ वहरत ।। श्वित इश्व कमलिमी जातिरल कि इरेव । कामा-্দর এই দশা বিধি কি লাখিবে । যা চ্যার হইরাছে উপা-য়তো নাই। ভানিলে কি হবে আর যে কবে গোসাঞি॥ श्रमित्रा विद्वात कथा विश्विष्ठ किटमाडी। अटधायुटश विश्वयी শ্বরে হরি হরি।। কি কথা কাহলে বিত্রে শুনে পায় হাসি। क्यारिक पतिव रेपरी दिना कालमधी।। यस्न कृति पुरल भाकि यमः (य कुरण मा। भरतर यम करत रम क्षेत्र कोवना।। অপিনার মন স্থা আপনার নয়। প্রবৃত্তি প্রতি দিয়ে ছু-লার আমায়।। কি ক্ষণেতে কাল ৰূপ হেরেছি নজনী। জন্তু-রেতে নিরন্তর গাঁথা নীলমনি । শরনে স্থপনে ছেরি সে नैंका बूहाति। भीन कि ला थाए। वीट बासा इरह वाहि।। ुकः गम (नर्मरी क्रयः गम व्याग। क्रयः गम कृतः भीत क्रयः। ্ম মান।। কুন্তু মম প্রতি স্থী কুন্ত উপ্রতি। তৃপক্ষ বি-🗝 🖚 द्वस्थः द्वसः अस शिष्ठ ।। तम कृष्यः विश्तम गर्थो जीवतम किँ লে। ত্যজিব এ পাপ দেহ প্ৰবেশি অনল্যা কৃষ্ণৰূপ ভাব খন যত দিন রবে ৷ না হবে কালের ভয় কৃতাত্তে তরিবে 🖰

উদ্ধবের আগমন!

# রাগিণী বাহার। তা**ল ডিওট**।

জ্ঞার কেন্দোনা রাই কোথা বঝোঁ শ্যাম। চায়ে দেখ ঐ ভাসিছে ভোর কালো ঠাম॥ মদন বুঝি সদয় क्ला, मनग (माहन बेटन निर्का, लमकटल हटला सूम- क्ला, मधुद तमटल वांद्य श्रुवा अस्म माम्या । ध्रा

🗸 প্রার। এই রূপে ত্রজাজনা বঞ্চয়ে ত্রজেতে। হেনকালে অপরূপ দেখ আচমিতে।। একুন্টের অবয়ব সুব্রিম ঠাম। তেমনি মেছিনচূজা নবঘনশ্যাম।। পরিধান পীতাছর বন-भाना भटन । इट्डाशटन सूरविधि **व तकून स्रकृटन ॥** भीरत भीरव আসিতেছে দেখিতে কৌতৃক। পীতাম্বর বসনে ঢাকিয়া শশী सूर्य ।। हतरनरू इन्तु बान्न गुन्नुव नाखिरक । इतन असूरक शिक् অলি ৩ঞ্জিছে । বে কেলেব লাখ যেন গোকুলে মাইল। হেরিয়া প্রকের লোক চমকিত হৈল। কানাকানি করিছে লাণিল গোপীচয়। রুদ্ধা নলে বিধাতা কি ২ইল সদয়। দেখ विश्व कृष्टक्य (शाकुरण छेन्छ। पूकिल त्रायात कृत्य एरला त्रममग्रे । यूकिन युक्ति कुक विदेश यञ्जन।। भूवादनेन क्लिन-র্ণী মনের বাদন।।। এ জার কি মনে ছিল পাব কৃষ্ণ নিধি কে জানে যে ভাতুকল হইবেন বিধি।। ছবা কবি ললিতা গো গাঁথ বনমালা। বহু দিন পাতে সাজাইব চিকণকালা।। যশো मा जांगीत कांटल दिन ने मालात । जानिसाटल वानी नीत्रमणि গো তোমার ।। এত বলি রুন্দাদ্তী হরিষ অন্তরে। আস্তে-वाटख शिल धनी दांशांद मन्मिटत ॥ धत्भी भएगाव दांशा निष्ठि-🕏 আ্ছিল। বৈঠ বলি ভাধিকায় চেন্তন করিল।। নিত্রা জঞ্চ হইয়ারাধা জিক্ষাসে দূতীরে। আজি বড় প্রফুল্লিভ দেখি যে ভোমারে।। কহ কহ প্রাণ সখী কারণ কি শুনি। এত কেন व्यास्त्रापिक करसक मध्यमे ॥ मृजी वटल बीमकी त्या क्षेत्र इतः করি। এসেছে গোকুলে তোর মনো চোরা হরি। পিক্ষণান্ত কর কৃষ্ণ বিরহ অর্চন।। পুরালেন কাত্যায়ণী মনের বাসনা व्यात ना कान्मिटक द्वरत अत्भा मश्वती। वन कल मत्रभन कृत গো জীহরি।। রাধা বলে কি কথা কহিলে সহচরী। এত দিনে मरन किर्णा करवरहून रहि।। প্রভায় না হয় মনে অপ্রপ किन । जावांत्र मात्रिमत वारम माँ जाव नकती ।। खवरन वितन इ। नल भी इलक्टेन। कि कथा खर्माल ब्राप्त फिरा वन नन।। একদিন একথাতোনাভি শুনিকানে। রুদ্যাবনচক্ত জাসিবেন इन्हांबरम । या यथ। श्वनांनि छ। इत क्वित कि निरम्न। कर-মের মত রৈন্দ্র ভোর কেনা হয়ে।। চল মধী লোহতাঁদে হেরি। গো শসনে। ধরে **মেগো**নাহি পারি চনিতেম্রণে। আ**নকে** জ্বশ ভমু দাঁজাতে না পারি! প্রেমবয়ে কংলে ২ইল **অঞ্** তারি। উদ্দেশেতে উনম্বা হলেম মজনী। শীঘ্রতি নয়ে इस मध्य खुन्यति । अक सब्दि ताककाता केंद्री में काहिता। मुख প্ৰীনেতে সন জীৰ মঞ্জিল। প্ৰাৰু মত সংগ্ৰহণ সন্ধি খানে হিল। ছীক্ষা আইসে শুনি পুলকে পুলি। একত্র ক্রেয়া যত গোপের জুলিভা। থেরিতে নীরদ রূপ কলে। স্থ্যা-चिका।। আঞ্জ ০লে রুক্ষানুতী প্রথ দেখাইবা। উদ্ধব নিত্রে উপ্নীভ হৈল গ্রিয়া।। নিকটেতে গ্রিষ: সবে করে নিত্রীকণ। ভাষের মতন নম দেখেন লক্ষণ । কিন্তু ক্রণেতের ভ্রুপদ **हिल माहै। ह्लिया विश्वास एट्स मट्स लट्टर हुई।। ध्र्यक** तक्षांक्र, म िरु माधिक इतरः। क्षांभ नम् कर्यांत्रनी वृत्रिः तन्त्रं मरम ।। विकाद विशिष्ठ । हाई छ। दवन नत्न छ। अकि विशि ছলনা করিল আওমিতে।। শ্রামের বেরাপ দেখি কিন্তু শ্রাম ময়। মৃতি পাচ ভাবি রুখে। মৌনভাবে রুখ। বিরুদ্ধে রুনারে एकि गवन वर्षित। १८७। तथी काम मध्य जाद नुसा काला॥ জিজ্ঞান উহাবে সখী উনি কোন জন। কোন কার্নো গো-কুলে দিলেন দরশন ॥ কিবা নাম কোথা ধাম ভাছার তনয়। শুনিলে রুক্তান্ত সখী সন্দেহ ঘূচয়।। শ্রীমতীর শ্রীমণেতে এই कथा रूरंन। উদ্ধবেরে কহে इत्या एमिया वहता। ওছে মহাশয় ভুমি কেবট আপনি । কোথা তব নিকেতন কিবা নাম শুনি। শুনিয়া বৃন্দার কথা কহিছে উদ্ধব। মথুবার বাস করি নাম যে উদ্ধব।। শ্রামু নই শ্যাম স্থা এই পরি-চয়। দেখিতে এ রুদ্দাবনে পাঠালৈন আমায়। আছেন কে-

সন রাধা বসস্ত সময়। দেখিতে এসেছি স্থী কুষ্ণের আ-জ্ঞার। শ্রীকুষ্ণের শ্রীচরণে এই ভিক্ষা চাই। সন্তকালে রাক্সা পায় স্থান যেন পাই।।

> তাগ উদ্ধারের সহিত রুন্দার কথোপ্রহান। রাগিণী সুর্বিট। ভাল অং।

দেখ হে উদ্ধান, বিহনে সেই মাধ্ব, সবে ভেলে হয়েছে শব। যে হতে সে ভ্রজনায়, গোলিকায়, নিরাশ্বয়, করে গেছে মথুবায়।। রুন্দারণা পুনাময়, সামান্য অরণা প্রায়, পশু পশ্চাকি নীবব।। ধ্রা।

जिल्ली। इन्हां वटन भाग गर्थाः, यागादम्ब भाग गर्थाः, আমাদের করেছেন মনে । ভাল ভাল ভাল ভাল নাল, ভালবাসা জান। গেল, এত দিন পড়েডে কি মতে।। তাব সক্ষে কি নম্পর্ক, তিনি যে গোপীর পক্ষ, আমরা জেনে ছি বিধিমতে " মুখে রহে মেই ভাল, শুনিলে থাকিব ভাল, বেমন থাকি ভার কিবা ভাতে । তিনি এবে হার স্থামী, যার পেয়ে নব প্রেমী, বিক্রীত ভাছেন বংশীবারী। ভাল করে তার মন, যোগান যেন অনুক্রণ স্থথে খেন থাকে দেস্তখারী ৷ ভার কি প্রবৃত্তি মরি, শুনে ছালি পায় ছলি: ওছে শ্যামস্থা দেখ त्मिथि। स्त्रांश स्कटन जिस्स कीरव, श्रीकटन एकन करता, कि इडेटर निटक तथिन नाकि।। क्षिण कार्षि भिद्र क्रम, फिटन কি ছে ফলে ফল। এ শীলভায় কিবা প্রয়োজন। কেমনে আছে রাই কিশোরী, ভা জাত্তে পাঠান হরি, দেখ এজে ষে আছে যেমন।। দেব সেই রুগ্ বিনে, হেন রুগ রুজাবনে, ব্রক্ষোপরে পক্ষ নাহি বনে। নাহি করে কলরব, হয়ে রয়েছে নীবব, দিবা নিশি অঞ্চললে ভাগে।। ভক্তে লাহি প্রব; নাহি কুসুমে দৌরভ, লভাগুণ শুকাইরা গেছে। মধুপতি মধু श्वितन, क्रांनिशन पिरम पिरम, सूधा विरम क्रमाक श्रेष्टरहा। গ্রাবীগণ মুদ্ধ হীল, যমুনা বেগ বিহীন, এজবাসী কেহ নাহি

ুবে ৷ দেখ তে উদ্ধাৰ তাই কোথা ক্লম্ভ ক্লম্ভ কই, এই কথা भक्टलत मृत्ये।। এই यে दम्ख काल, खामारमत इरम काल, নিরস্তর করিছে ডাভনা। কত খালা আছি নয়ে, তার প্রেমে ্রেমী হবে, কি করিব উপায় বলনা।। আহা মরি কমলিনী, দেখা যেন গাগলিনী, সোণাব অঙ্গ,কালি হয়ে গেছে। দিখা নিশি ভাবি তাঁই, প্রাণে যদি মরে রাই, তবে দাঁড়াইব কার কাছে।। রাধা ক্লফ্ড বিনে জারু কিবা গতি গোপিকার, সে जनगा नकनि शक्ति। व्यक्ति कालि भटत शाही, कुखान ছলেন হরি, আমবা দাঁড়াই কোথা বল।। কালি জাদিবলে ছরি, গেলেন শেমধুপুরী, অল্লাবধি সে কাল হলোন। একি ভাগা গোপিকান, ভাঙে ব্রংজর সমাচাব, ভোষারে পাঠাবে काल (माना ।। कालक के कार्याल शहर, जकवानि ज्ञा महत्, কালাটাদের গুণতো না জানি। তুমিতো হে কালঠাম, প্রাঠালেন নেই শ্রাম, কাল ভয় আর নাছি মানি।। নীরদ ययुगा ताती, जारह मानि सानं कति, मानि श्रमि क्यांकिरलब् গান। লাহি প্রি নীর ামর, কাল ভেবে নিরস্তর, কালি খলো ধ্যাপিকার প্রাণ।। কালার মনে যাহ। ছিল, সকলি প্রণিত হলো সকলি হে কালেভে না করে। তব হে বেংগোনা মন, কেন করি সে ভিন্তন, মিছে কান্দে মরি পরের তরে॥ নাহি দিই তার দোন, স্কলি কর্মেন দোষ, আপনার দোষে না भटक्षि । कालांदक व्याचा जार्रतहरू, याहिएस त्यांत्र मिट्स, নালা কেটে জল না এনেছি।। কে জানে যে সরি মরি, এমন লম্পট হরি, বিবেচনা ক্রিলে আগেতে। তবে কি হারাই কুল, শা। য কবে জাঁখি পল, মজিতাম তাহাব প্রেমেতে।। নিজে অবলা সবলা, নাছি জানি কোন ছলা, নাবীর হে সর-লভা প্রাণ। বাঁপীর গানে মগ্ন হয়ে, ভার প্রেমে বিকাইয়ে, শেবেতে হইল জপমান। গুরুজ্য না করিয়ে লাভের মুখে ছাই দিয়ে, ধর্ম পথ নাহি চাহিলাম। কুলে জলাঞ্জলি দিয়ে, কলস্কিণী নাম লয়ে, তার পারে দেহ সঁপিলাম।। হেন

स्थार कालि पिरा, शालाहेल रंग कालिएस, खरलाइत ख-পুরুলে ভাসায়ে। লোকে বলে দয়াময়, কি জানি কি গুণে ্রকয়, হাদি পায় এ কথা শুনিয়ে।। আমি যদি দেখা পাই, 📆 🎒 দিব ভার ঠাই, একি ভার বিচারেতে হয়। সভ্য ভাজে 🗮 🕏 कम, त्म शरम लेत भत्रन, ভाति कि 🤷 में मना इश्।। খিরি মার্নে পারে ধরে, ভাকিলেন আছর কীরে, বিধিমতে স্মান ঘাড়াইয়ে। শেষে অদর্শন হয়ে,ভারে অনাথী করিয়ে, बंहित्वन रक्यरन कृतिदेश। अशरनरक नाहि कानि, होड़ा-₹ৰ দীলমণি, ভিলেন্ত্ৰে হইবে বিচ্ছেদ। যত দিন বেঁচেরব, नाम गर्क मिलाहेव, त्रांशकूक इरवन। अर उंप ॥ 🏯 प्रत्येटक রীধানাথ, রাধার মাথাতে হাত, দিয়ে নলে ছিলেন আপনি। শ্ষ পর্মান্ত বেঁচে রক, তব প্রেমে বাঁধা রব, হবেনা বিচ্ছেদ্ ক্ষালনী।। ভূমি মণি আমি কণী, আমি মীন ভূমি পানী। ভুষি দিবা আমি দিনমণি। আমি বস্ত্র ডুমি ধন্ন, ভূমি প্রাণ আমি ভনু, নিশ্চর জামিহ কমলিনী। মিথাবাদী হলে। হরি, তায় রাজ্য অধিকারী, ভূলিলেন আপনার কথা। আপ মার অস্ট্রীকার, নাহি রাথে ব শীধব, থাইলেন অবলার মাথা।। কহিব কি বিধাতারে, হেন জনে রাজা করে, সকলি মা কুর্ত্তে করায়। যে জন চরাতে। গরু, সে হৈল জগৎ ক্রিক্ত মহা করা দায়।। হকু তিনি হকু রাজা,লোকেবে ক্রুক পুজা, আমাদের ননীচোরা হরি। আদ্য অন্ত তার যত সকলে হৈ আছে ভাত,ক্ষ নিন্দা করিতে হেনারি। ক্লঞ্জম ক্ষদয়েতে, বিবাজ হে আনন্দেতে, জীরাধিকা লইয়া বা মৈতে। অকিঞ্চন দেখি শ্যাম, অত্তেনা হইও বাম, পরি ত্রাণ কর কাল হাতে।।

হন্দার প্রতি উদ্ধবের উক্তি।

्राणिनी वर्षित शिक्षण जर। वर्षेत्र शिक्षण जर। वर्षे

্ জীদামের শাপান্ত, পাবেন রাশারাশাকান্ত, এ ছঃখা-ন্ত হইবে তথন। ধ্রু ॥

পয়ার।, উদ্ধব বলেন সুখি কি কথা কহিলে। কুফ কি গো তোমার্কের ছাজা কোন কালে।। রাণা মন্ত্রে দীক্ষা ক্রি ওগো সহচরী। রাধানামে বনমালী বাজান বাশরী। চুভারে ময়ূর পাথা রাধানাম ভাতে। একুকেন নাম রাধা নাঁটিবর পশ্চীতে।। ভিলেকরে ত্রিভঙ্গ রাধার ছাড়া নয়। যেই রাঁধা সহতরী সেই শ্যামরায় ।। যেখানেতে রুক্ষ স্থী পক্ষী সে**ই**ং খালে। যেখালেতে দয়। ধর্ম থাকেন সে স্থানে। যেখানে निननी (সই थे। न मधुकत ॥ यथा देखा (प्रवताक ख्या क्रमधत् ॥ ভারত প্রদাস যথা তথা ব্যাস ম্বান। যেখানে স্বাসানি সেই-খানে গুলপাণি।। যেখানেতে লজ্জা আছে দেইখানে মান। ষেখানেতে ভত্ত্ব জ্বান দেখানে নিৰ্ব্বাণ । যেখানেতে বিবেচনা সেই খানে যশ। মেথানেতে বাভবল সেখানে পৌরষ।। যেখানেতে অনাস্র পাপ নেইখানে যেখানেতে রেই শিক খাকে দেইখানে।। অভএৰ সহচরী সত্য জান মনে। মেখা-নেতে রাধা সখী রুক্ষ সেইখানে ॥ ভবে যদি বল কেন ছুঠা-এে ছুজন। তাহার রুহান্ত বলি শুন দিয়া মন।। সোলো-কেতে যখন জাছিলা বংশীবারী। রাধান্ধপে সেধানেতে ছি-লেন কিশোরী। ভূমি আদি সকলেতে ছিলে গো সঞ্চিনী। তথার চিলেন রাধা ত্রজাসনাত্রী।। ভক্ত বংস**ল হারি/ভাক** ভের প্রাণ। ভকতের মনোবাঞ্ছা পুরায় ভগবান।। শ্রীদামের শাপ ছিল রাধার উপর। ক্বঞ ছাড়া হইবেন শতেক<sup>্</sup>বং-সব।। লেইহেত্ জমিলেন ভূমগুলে পারী। ভকতের বাঞ্চা সিদ্ধি করিতে মুরারী।। বিশেষে ক্ষিতির ভার নাশিবার ভরে: কৃষ্ণলীলা প্রকাশেন পৃথিবী ভিতরে। ছ্রস্ত অসুর স্ব रदत्र द्वा अवन । जरत्र रूप सिमी विष् रुदत्र हिन है। देन हैं। নাশ করি ঘুচাবেন মহী ভার। তিনি বিনা দৈত্য বধে 🤹 स <u> भिक्ति कार ।। नामाना मानव मेथी ताथाहरू मह । उन्हें मही</u>

রাধী পূর্ণ জ্রন্ম শাসরায় ।। নারদের মুখে লব শুনেছি র্ডান্ত শার্ক বৎসরাতে রাধা পারেন জ্রীকান্ত ।। অত এব স্থির হয়ে খ্রাক সহচরী। আসিবেন জ্রজে পূন্ধ সেই বাঁকা হরি॥ এত বলি উদ্ধব চলিল নিজালয়। শুনি হাহাকার করে যত গো-পীচয়।। ক্লুফ পদে মূঢ় মন মজরে নিতান্ত। পার হবে ভব স্থী না ছোবে ক্তান্ত ।।

অথ রুন্দার মথুরায় গমন। রাগিণী বাহার। তাল তিওট।

আদি আত্তে যাব তোমার মাধবে। চিন্তা নাই

ক্রীকান্তে গাবে ॥ কৃঞ্জনাম করি, যাত্রা করি প্যারী,
অবশ্য এ যাত্রা সিদ্ধি হবে ॥ কর দাসীরে আশীকাদ, পুরাইব মনোসাধ, এ বিচ্ছেদে বিযাদ নাহি

রবে ॥ পুনঃ কালাচাদ ব্রজেতে, উদয় হবে মধূর

ক্রমত্তে, শ্যামের বামে বসিবে। ধ্রু।।

ক্রিপদী। উদ্ধানের কথা শুনি, সে রুকভারুন নিন্দানী,
মুদ্ধাগত পড়ে ধরাতলে। দেখি হাহাকার করে, চিত্রা রাইকে ভুলে ধরে, উচ্চৈ:স্বরে কান্দে কৃষ্ণ বলে। চিত্রা কর
ওসজনী, কেন হও পাগলিনী, স্বকর্ণতে সকলি শুনিলে।
আর কৃষ্ণ আসিবেনা, ভাবেতে গিয়েছে জানা,
ক্রিমিছে আর
কি হবে কান্দিলে।। শুনিয়া চিত্রার কথা, রাধা মনে পেয়ে
রাষ্ণ্র, ছিত্র পুত্তলিকা মত রয়।। সজল যুগল আঁথি, মনে
মন্দে হয়ে তৃঃথি, মৌনে রহে কথা নাহি কয়।। নিঃশন্দে
রহিন্ধ ধনী, মুখে নাহি সরে বাণী, অধোমুখে ক্ষিতি দৃষ্টি
করে। বদনে বসন দিয়ে, রাধা ভাব মনে হয়ে, ভাবে চিত্রা
কি করি অন্তরে।। যে বুঝি রাধার মন, ইথে সাধা জ্বান্দ্রির সাধিলে দিরাদ জার বাড়ে। সাত পাঁচ ভাবি মনে, চলে
হিলা নিজ্জানে, দেখি রাধা মুদ্ধা হয়ে পড়ে।। অচেতন
ক্রিমানিকভানে, দেখিরাধা ফুন্টা হয়ে পড়ে।। অচেতন
ক্রিমানিকভানে, দেখিরাধা ফুন্টা হয়ে পড়ে।। অচেতন

थता देश्टल क्लाटल है अदर्शिय वादकारक हूँ की, कश्टिहन जु ধার প্রতি, ত্বির হও ও শালকু নারী। তব ছংখ স্চাইর आिम मधुश्रुदत याव, बदन मिन उत आन हति।। इति कति তব यन, পলায়ে মধু ভূবন, চোরা হয়ে কৃত দিন রবে। যাইয়ে আপন জোরে, বেধে আনি <del>ভর্ম</del> চোরে, সাধ্য কে ভারে রাখিবে॥ কান্দ রাধাপ্যারী, আমি তব হিতকারি, এই ভুমি জানতনো মনে। করিলাম অঙ্গীকার, যাইব যমুনা পার তব কার্য্য স্থা-धिव यञ्चा अनित्य वृत्मात वानी, जूरे हत्य कमलिनी, मूडी প্রতি বলে বিনয়েতে। কি বলিলে সহচরী, এনে দিবে প্রাণ হরি, প্রত্যয় না হয় গে। মনেতে॥ তেমন কপাল নয়, পুনঃ গোকুলে উদয়, হইবেন বাঁকা বংশীধারী। সে ৰূপ ছেঁরে नयरन, कालाडीरकत स्थालातन, जूड़ाइत अमन डरकाती ॥ আমি জানি রুন্দা সংগী, ভূমিত ছঃধের ছঃখি, ছোমা বিনা কে আছে রাধার। কবে মধুপুরে যাবে। হারা নিধি মিলা ইবে, কবে হব যাভনার পার। রাধাবলে বংশীধারী, করে বাজাবে বাঁশরী, কবে স্থামের বামেতে বসিব। বনক্রো माला (ग्रंथ, माकाहेव तम गरलरंड, करव वाका नम्रतन (इतिच স্থাম আন বা না আন, যে কথা শুনালে যেন, কুঞ মোরে क्रित वर्णन। श्रुटन প्रान क्रुड़ोहैन, विटक्क्ट्रम्त खाना निम, শ্রবণেতে জুড়াল শ্রবণ॥ বিলম্বেতে কিবা কায, নাছি স্থী সহে ব্যাজ, শীত্রযাহ মথুর। ভূবন। আমার র্ডান্ত যত, क्रस्थित कतात्व कार, वल जात निकृष्टे मत्ता । धरकक विन-য়া প্যারী, দুতীরকরেতে ধরি, জোবে তারে অমিয়া বচনে 🛭 অমিতীর যত্ন দেখি, রুন্দা মনে হয়ে সুখী, স্বাত্রা কৈল মথুরা . ভুবনে । প্রেমানন্দে গোপীগণ, ক্লফনাম উচ্চারণ, চতুদ্ধিনে করিছে লাগিল। কেহ বলে ছব্নি হরি, কেহ বলে সহচরী। রন্দা বুঝি বিধাতা হইল॥ হর্ষিতে গোপীগণ, করে মঙ্গল **ष्ट्रिक कार्याकन विविध अकात। त्कर भून घंडे जारन, क्**रि

চন্দ্রনীর সহিত রুম্পার কথোপকথন। রাগিণী আলেয়া। তাল আড়া। বুল্দে গোবিন্দ যদি পার আনিতে। জম্মের মত

বিকাইব তব চরণেতে। সেই রুঞ্চন্দ্র বিনে, হৃদি গগণ জ্যোতি হীনে, শ্রীনাথ অভাবে শ্রীহীনে

ু হুয়ে আছি সকলেতে। ধ্রু॥

ত্রিপদী। এতবলি সহচরী, রাধারে সাস্তুনা করি, চলিলেন মথুরার পথে। পথ মধ্যে চন্দ্রাবলী, হয়ে অতি কুতৃ
হলী, ধরিলেক ইন্দার করেতে।। চন্দ্রা কহে ওগো দুতী, কে'
খার চলেছ অতি, ফ্রতগতি দেখি কি কারণ। বুঝেছি গো
জাতিপ্রার, যাবে নাকি মথুরার, বল বল জুড়াকু প্রবণ।।
ব্রজান্দনা মধ্যে অতি, তুমি সখী বুদ্ধিমতি, তোমার তুলনা
দিতে নাই। এ কর্মা ধন্যপি পার, এ ছুর্গমে যদি তার, কেনা
হয়ে রব তব ঠাঞি।। বৃদ্যা কহে চন্দ্রাবলী, আত্তে বটে বনত্রের বত তব ঠাঞি।। বৃদ্যা কহে চন্দ্রাবলী, আত্তে বটে বনত্রের বত আমি সথুরা ভুবন। যার ধন তারে দিব, রাধাণ
বিশ্বান্ত করিব, অন্যো নাহি পাবে ক্রঞ্ধন। একবার চুরি
বিশ্বাহিলে স্টবরে, পথে পেরে প্রামের দুর্শন। হরিয়ে
বিশ্বাহিলে স্টবরে, পথে পেরে প্রামের দুর্শন। হরিয়ে
বিশ্বাহিলে স্টবরে, পথে পেরে প্রামের দুর্শন। হরিয়ে

তেমার প্রেমের দার,রাধার মানে আমিক্টার, বোগী কেন্দ্র মান ভিকা করে। তবু নাহি যায় মান, পেনে করিয়া বিধান মান ভঙ্গ কর্ম্বার পরে।। নাগস্থালৈ ভাষারার, জুরি নাগ त्रीत शांत्र, भेरम भरन भागा का बिला। करम श्रेक हाल नित्री, कांनि व्यानिव वैनियो, एउँ वैथु यथु भूरत क्षेन । व्याइ विन চক্রাবলী,ভোমা হৈতে বনমালী, পরিত্যার করিল বাধারকী यिन जामि क्रक्ष्यतन, जात्त नाति वृत्मावतन, अवात द्वा जिल्ल না তোসারে। ও নিয়া রুকার কথা, লাজে চক্রা হেট ফ্রান্ট্র पृठी প্রতি বিনয়েতে বিলেশ কেন দৃতী বাক্য **শাণ, বিলে** कतिष्ट मन्नोन, जात (करन निष्म) कत इट्टा की में दक्षात देखे গেছে, স্থামত ও বাদ সেখেছে, অনাথিনী করেছে স্বাহরী जूमि यपि भूनः खरंक, चोरक भीत खर्कतारक, एकूर्विक দিও গোরাধারে। রাধা রাজার নিন্দিনীটোডাই বঁলি 💘 সজনী, তাব প্রক্ষে এক পক্ষ হলে। আমাদের নাই প্রাঞ্ কেবল গো রুঞ্চ পক্ষ, বিপক্ষ নয় সে পক্ষ হইলে 🗗 🐗 📠 অভি অভাগিনী, নাহি আমার সঙ্গিনী, আহা বলৈ ৠ कने नारे। जुमि गारव मधुशूनी या जान लग- नरणती, देवी शरक तल कांत्र है। कि ।। कक तलि हिंसावली, निक विदेश পেলা চলি, বৃন্দাদৃভী ধার মগুবাতে। 🔊 ইত্রের রাঙ্গা পার্র, মুন্ত সংযোগিয়া ভায়, ক্ল্ড গুণ রচিল ভাষতে।।

বৃশ্দার সথারার প্রবেশ।
রাগিণী কুছিনী। তাল আড়া।
প্রাম কোথা রহিলে দেখা দেও ই দয়া করে।
কে তারিবে তোমা বিনে, দীনে কীণে জনাবিরে। কৃষক্ষক্ষবলে ইংখেনল ভলে, পুডে
মরি যে তানতো, কলে ভলে দেও আমারে ই

পায়ার। এই ৰূপে বৃশ্দান্তী গোকুল হটুতে। উত্তানি স্থানী কৃত্তের ভারেতে। অনর পুরীক প্রীক নার মনিষ্ঠান যেন ভলে দীপ্ত ছতাশন। স্থাকান্ত নীলকুল

क्षेत्र विश्व क्षेत्र थिए त्रिक त्रावसानी ।। जाना विश वेष क्रेंग श्रेषांका छिएट । नहतर याताथानाव छशदत ্বাজিছে। <del>অপত্ৰ</del>ণ বাজপথ দেখিতে সুন্দান্ত কত শত त्वाक कृत्व काट्ड में दनां इत ।। क्रांकथानी (कथि वृष्ण। साहिक एकेन । करम करम भूतमरथा क्षरंत्रण कतिन स भूतमरथा छ।-क्ष किकारन कांग्रीभग। काथ। इतक अतन बादि कांश्रांत ক্ষন।। নবীনা, যুবতী দেখি ৰয়েণ তরক। রতিপতি যুবতী किनियां कर अके। अवाकिनी कात कामिनी कि कातरन बाहि। तामकारत प्रथा मिटल वनः छाश छनि।। कि नाम (कः শ্বাস ধাস কার্যার স্ক্রের। কে ভোমারে পাঠাইল এ মথুরা-वही । वृत्मा वटन बात्रीशंग तृत्मा नाम धति। वृत्मावदन त्रीका सीर जात गरहती १। जिनि शोठाहरलन काती व मधुक्तरन। প্রবেশন আছে কিছু রাজার সদনে।। অতথব যাব আমি होनात नजात्र। निर्देशन चाटक किছू कविव ताकात्र। बाती ं काल प्रतिवृक्षा ताक जाका विस्ति। ना शाहरवयाहर जुनि ्राज्य मत्रभटन le देवतर सम्मती जारंग कानार ताजारत। स्व ক্ষেত্রন রাজা কৃষ্ণির ভোমারে। এত বলি গেলা ভারী লভার ভিনারে। বৃশ্ধার বৃত্যন্ত সব কহিল রাজারে॥ শুনির। বৃশ্ধার কথা গোলিক্স তথন। আভেবান্তে উটি দাঁড়াইলা नाजामण।। व्यक्तिमञ्ज इत्त कृषः व्यक्तिम। वाद्यरण। वृष्याद्व दम्बिदम् कन अभिन्ना वात्काद्रका। धरमा धरमा थान मशी একি ভাগ্যোদর। কত আনন্দিত হলেম দেখিরা ভোমার।। **এতেক বলিয়া क्रम्म्** छो करत धरत । वृष्णांदन हेश (शासन সভার ভিদ্ধর ।। বিচিত্র আসন দেন বসিতে বৃন্দারে । বসি-त्नन वृत्सान को क्रथात सामदत ॥ ज्या ता किसादन क्रक कर्डी कबती। जीवरुशा आह जान आह् कमनिनी।। का बाहरत कात्रगटकका मालिनी। क्यम बाहरत लिंहा कार्या के स्वापन कारह की नामानि एक मुक्ताना

গ্রামনী কর্মী স্থা আহেগা কেম্পা। করে মন ক্র নামাস্থানের পান। যদি হবে দারণ কালের ছাতে ত্রাপা। এক কের নিকটে বৃশ্লীয় প্রজের

সংবাদ কথন।
রাগিনী সুহিনী। তাল আড়া।
তাই তাবিহে কুফ প্রেমের কল এই কি। যে
তোমাতে প্রাণ সঁপে শেষে প্রাণে মরে সে কি।
ও হে দীননাথো, একি বিশরীকো, যে তব চরণাপ্রিত, নিশ্চিতো বধ তারে কি।। গ্রা

जिलमी। तुन्मा वटन ७८६ इति छन निरवाल करि ভোমা বিনা যে যেমন আছি। কি কহিক পারিচয়, সে বৰ্ণ নাহি হয়, তাই বঁধু জানিতে এবেছি।। কালি জানিৰ বলে ्ति, निधित्त खः अते नाती, हल**्भारक धारल मथा हरना। द**र् ার পাইয়া রাজ্য, এজপুরী করি ত্যাজ্য, অসহ বিচ্ছেদানল দিলে।। শুনহে কুবুজা কান্ত, ব্রজপুরের বৃত্তান্ত, যে **সুরোডে** লাছি হে গোকুলে। প্রাণে মাত্র নাহি মরি, বেঁচে আছি ব শীধারী, পড়ে তথ আশা বৃক্ষতলে।। ক্রমে ক্রমে আশি তরু, শুকাইয়ে হলো সরু, হেরে হরি নিরাশ ভাবিরে। 🐗 লিনী প্রাণে মরে, তেমোর বিচ্ছেদ শরে, জেনে কিছি জা<sup>ই</sup> ননা কালিয়ে।। ছিন্ন ভিন্ন বৃন্দাবন, গোপ গোপী অচেডন্, ভাসিতেছে নয়ন সলিলে। পশু পক্ষী নাহি রব, বৃক্ষে না হিক প**ল্লব, অলিগণ বসেনা কমলে।। আ**র শুলী নুপমণিং তব সাতা নন্দরাণী, অস্টিচর্ম সার হয়ে আছে। গান করি তব ७।, পথে পথে সর্বক্ষণ, উন্মাদিনী প্রায় অমিতেছে। নন্দ আর উপানন্দ, কান্দিয়া হয়েছে অন্ধ, সন্ধ তাবা আছে किया नाहे। अभागापि यह नेबी, छामात विहरमें नेबी वान्ति वर्तन कार्यात्र कार्यास् । अति छन वनमानी, इमर्कन कथा बलि, क्रिमेडीत महत्मत अध्या करिय कि मेर्रियत स এক ক্রেরভর, আচমিতে হরেছে ক্রের্ড্রার্ড্রার্ডির দিন নদীর দায়

कृत, करक केन्द्र कृता (काकाक क्रांबनी बाकाक मा-विस्म (र तिहे जात, बात अत्र विश्व कात, बात बात , अकि अविवात । यहिन्द्र त याजना, कत्त ब्रामि करल সোণা, অভিমান কৃতীর তাহায়। অকাতরে পায়ে ধরে, अंश्रिमान तम कुछीरत, आत्म वंध करत लाशिकांत्रभ खन अन स्वीदकन, कहि अन मितरमय, तम नहीत मकल काहिनी ক্ষণে ক্ষণে ঘূর্ণা হয়, গঞ্জনা মাক্তত বর, ঝড়ে ভুবে অবলার তরণী।। নিবেল্ল করি संশ্य, কেন তারে হলে বাম, কেন वीष गाधित खब्ब छ। दण्ड मन ममर्जिएस, निकारेटस तामा লালে, মারিলেম তোমারে রাখিতে।। স্বর্গতা কমলিনী, ভব প্রেমে কার্কাজিনী, ভোমা বিনে জানেনাত জার। তো-জীর প্রমেতে মজে, যেইজন কুলভাজে, শেষে কি হে প্রাণে बैंगि जात । कारत कत जानतिगी, कारत कत जनाशिनी, क-धन कारत रुखरर मनग्र। स्वयन निर्मग्र क्षांग रुतिया शदतत প্রাণ, পরে দেশ ছাড় দয়াময়।। করত আপন পরের প্রিয়-ন্ধন ভাগি করে, যে তোুমারে অপ্রিয় না ভাবে। যে তোমা-র হয় প্রিরঃভারে কেন অপ্রিয়, ভাব কিছু নাহি পাই ভেবে क्षिन लाशीनन, मितिया ଓ இहत्रन, ना शाहेल स्थान ি ক্রিবে। কেমনে হে শ্যামরায়, কুব্রা কি পুণে ভোমায়, वाकित्वक त्थारमत वक्तान ॥ हिहि देवत्व लक्का रम्भ, तारे ইছতে কি কুজায়, ওহে বঁধু এত মধু আছে। কেম্ন প্রেমের ধারা, একেমন প্রেম করা, বাভারে রাভার জানা থেছে।। बर्देव (जटनहि बीशिक, श्रुज्ञम निक्र प्रक्रि, क्या धर्म नाहे শরীরেতে জারীর সরল প্রাণ, নাহি হিভাহিত জান, প্রাণ रंगत श्रेक्टर्बत कारछ।। रमश्रद हिक्न काला, क्षेक्टियरल कुन विकार समाक्षारण गटत त्य स्थानुदर्ग। ना स्थारन स्थान स्थान भी भी कि रेमर था। कार्क एक नक्षण शूला।। नुकट्याफ दक कार्याक कारों चटक नकी केतः कष्ट्र नथा चटन ह बागरत। क्रियाक बाग गातीकक्षमा नहिक दश्ति, विक क्रिक हमनीत

প্রাণে । অখন মনেতে করি, এবার ক্রীরেল ছরি, নির্দয় পুকর্ম জন্ম হয় । এ লাগুনা এ গঞ্জনা, জার প্রাণে মহেনা, নমকার করি ভোর পার । নব নীরদ বরণ, ভাব মন অমুক্ষণ,
কালের ভাবনা দুরে যাবে । ইংক্রাল সুখে যাবে, পরকালে
মোক্ষ ইবে, অনায়াদে বৈকুপ্রেতে রবে ।।

**बिकृत्य**ेव (श्रम)

রাগিণী থাষাজ। তাল মধ্যম ঠেকা।
তুমি জেনে জাননা গো রজনী। আমি কড়ু ছাড়া
নই রাধা রস বিলাগিনী।। মম শরীরে শক্তি সে
প্রকৃতি ৰূপা সুখদা মোক্ষদা পাারী ভক্তি মুক্তিপ্রদাযনী।। ধ্রু।।

প্রার। রন্দার বচনে **রুক্ষ**্কাভিজত হইরা। কহেল মথুরাপতি বিনয় করিয়া।। ওগো রুদের আর নিদের করোনা আমায়। শুনিয়া ব্ৰজের কথা প্ৰাণ দশ্ধ হয়।। আহা মরি কি দশা হৈয়াছে আমা বিনে। ধিক মোর রাজ্য ধন ধিক মোর প্রাণে।। মা যশদা পিতা **শব্দ আ**মা বিহনেতে। কেমনেতে সজনী গো বাঁচে প্রাণেতে।। যে ৰূপ দারিত্র ধন শুল প্রোণ সই। তেমনি গোনন্দ যশোদার আমি ২ই 🎉 আমা বিনা সে দোঁহার কিবা গতি আর। ভুলিরা রঙ্গেছি: পেরে ভুচ্ছ রাজ।ভার।। প্রাণ কমলিনী স্থী রয়েছে उटकट । पूना पाटर जामि नशी जाहि मधुताट ।। नामटन विश्वाम जामि त्रांश काम दहति। आदम वीचि ताश नामाग्रस পান করি। জীমতী শরদ শালী আমি গো চকোর। রাজ রাজা এজা জালি ব্যাত চরাচর।। যেই রাধানেই জামি দেই चित्र रचन । इस्मावन हाका स्मापि नहे त्या कथ्यकाः हाका 'আৰু ক্ৰীয়াধাৰ পিছে পিছে থাকি। জলি কি পৰীনী ছাত্ৰ वादक व्यानमधी। धीमठीत ताकारीत विक्री व वदहिक त्रामा टेस्टफ त्राधानाथ नाम शाहेशकि।। ताह हेस्टफ आवनेती 

নক নকত্র গো উঠিলে গগণে। পোতা নাছি হয় য়ৄয়ৄ শ্লাধরু বিনে।। জল বিনা শোতা কি গো পার সরোকা। কল
কুলু বিনে কবে শোতে ছব্রুবর।। উষ্ঠ কুচ বিনা শোতা নারীর কি হয়। গুণ বিনা স্কশ্বরুব শোতা নাছি পায়। তেমতি
ক্লামার জান বিনা নে কিশোরী। কুজার কি শোতা পায়
এ মথুরাপুরী।। ক্লয় নিকুঞ্জবনে আছেন কিশোরী। আনন্দে
রাধারে লয়ে স্থে বিরাজ করি।। মনোস্থে নানা ফুলে
আত্রণ গেঁথে। মনে মনে পরাই গো রাধার গলেতে।।
রাধাক্ষ একতত্ব জানিহ নিশ্চয়। চনকদলের নাায় ভিয়
কিছু নয়।। রসনা আমার ওরে বল ক্ষুনাম। নিরস্তর ভাব
মানে ত্রিভঙ্কিম ঠাম।।

শ্রীক্ষণের প্রতি রুন্দের ভৎ সনা।
রাগিণী খাস্বাজ। তাল মধ্যমান ঠেক।
জানি শ্যাম রাধার ভালবাস হে যত। রাধায় মনে
খাকিলে কি বনে সে কান্দিত। রাধাকান্ত রাধাকান্ত, হইলে নিশান্ত, তবে কি হে কুজা দাসী
স্থুতন প্রিয়সিনী হইত॥ ধ্রু॥

পরার। রুদা বলে বংশাধারী কথা অপরূপ। অবলা পাইরা বুরি ভুলাও এরপে। রাধা ছাড়া নও তুমি কেম-নেতে হরি। তবে কেন বৈলে হেপা ছারে পরিহরি। তারে ছাড়া নও তুমি যন্তাপি জীকান্ত। তবে কেন তব থেদে লাদে সে একান্ত। আদ্রিকের টান ক্লা রাধার থাকিলে। বির কি রে পারী তালে এরানে থাকিলে। মুখেতে বে-জারে করে পারী তালে এরানে থাকিলে। মুখেতে বে-জারে করিছা গানেতে যারে করিলে উদানী। তারে করি নিরাধা সহিনী কৈলে দানী। বার মার্লে ভামরার ফোলী লোক ছিলে। বিদ্যোলয় বৃত্তি তাতো কেলে ছিলে। কে বিজেনের ভর থেনে দার ক্মলিনী। সলিল বিহরে যেন লোক ক্রিনী। ভাহার উম্প হ্রক আছে ত্র ভারে। শীক্ষ

যহুপতি। কের্মাব তার কাছে হইয়া ভুপতি। সেওত সামান্যা নহে ত্রিলোকেতে জানে। পায়ে ধরে ছিলে বঁশু যার অভিমানে। পেয়ে ছিলে ধার কাছে কোটালির ভার। তার কাছে যাওয়া বঁধু এত কি হে ভার। আগেমান রেখে থার **বাড়াইলে মান। এবে তুঃখে ডুবাইয়া কর অপমান**। ভোমার রাজ্যেতে শুনি নাহি অবিচার। বিঢার্য্য হইয়াছ করু বাধার বিচার ॥ সাধি যার করে ধরে করিলা পিরীতি। তা-গাকে ভুবানো কি রাখাল রাজবীতি॥ তব খেদে তার চকে পড়ে জলধারা। ভাবে যে নির্দয় এত রাখালের ধারা॥ ওহে সক্ষচন্দ্র ভূমি গোকুলের চন্দ্র। অন্দকার গোকুল বিহনে রুক্ত ্দ্র ॥ রন্দাবনে য য়া। এজবাদী কর মুক্ত। কুব্রু: রাছ হৈছে হও একবার মুক্ত ॥ আর কথা বলি ওছে ব্রিভঙ্গ নাগর। নাগরীরে হেন করে কে কোথা নাগর। বিশেষ যে তোমা ্ই নাহি জানে মনে। তার কি হে মন সাধ থাকে মনে মনে। সে নাবী কি গুণে তব ছালে নিরন্তর। তার আঁপি: কথন নাহয় নীরস্তব॥ আমি অতি মুট্মতি ভজন নাজানি। ইথে যদি ত্রাণ পাই তবে নাম জানি॥ রুন্দার এতি এক্লিকের উক্তিঃ।

রাগিনী তৈরবী। তাল তিওট।
সথী সে রাজ্যে নাহি সুখোদর। যে রাজ্যে নাগর
হয়ে কোটাল হয়। তাতেই অধৈর্য্য হয়ে, সেরাজ্য
তেয়াগিয়ে, অপার্ব্যে এই মধুরাজ্যে হয়েছি উদয়॥
ক্রিপদী। রুম্ফ কন ওগো রুদ্দে, কেন কর মিছে নিম্মের
ইমি কিগো জেনেও জননা। কৈতে হলো সে কাহিনী, না
বিললে ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচেনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচেনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচেনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচেনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচেনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও সজনী, এলাগুনায় প্রাণ বাঁচিনা॥ শুন শুন প্রাণ
বিল ও বারি করে, রাধারে মানিনী করে, আমার জবস্থা কৈলে
ক্রিক্ত হৈতে মোরে, ক্রিমেছিলে বারি করে, সকলি
ক্রিক্ত হৈতে মোরে, ক্রিমেছিলে বারি করে, সকলি

THE STREET OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF T

नथी, नांभरत्रां वन मिथि, कि कांधा नातीन भारत धरत। 'কে কোথা মানের ভবে, যোগী সেকে ছাবে ছাবে, ভিক্ষা ছলে মানভিকা করে। সুখে আছি সহচরী, এসে এই মধু-পুরী, ঘুচেছে গো পার ধরা ধরি। কথার কথার মান, ভা-ক্রিতে সে অভিযান, ও সজনী আর নাহি পারি ॥ **মি**ত্য হৈলে कें कार्व। कि, কেমনেতে প্রাণদখী, পুরুষের বাঁচে বলপ্রাণ। ভাহাতে বিবাগী হয়ে, কংস যক্ত ছল পেয়ে, এনেছি হে লয়ে নিজ মান॥ তোমাদের যত দেখি, ঢাকা দিয়ে সব माय, मिट्ह मायी कत्र आमादत। तूत्य यनि तन्थ मह. আমি কোন দোষী নই, দোষী বিনা দোষ কোথা ধরে॥ পু-রুষ পরেশ জাতি, স্বভাবে সরল অতি, দেখ স্থী তহার প্র-मान। मक यख (यह काटन, म डी भिव निका ছटन, अनावाटन ভাজিলেক প্রাণ। শুনিয়া সতীর নাশ, পরে স্থী কুত্তিবাস, নারী শোকে শোকাকুল হয়ে। দক্ষ যজ্ঞ নাশ করে, সভী দেহ শিরে ধরে, এমে ইর কান্দিরে কান্দিরে ॥ শিব সভী দেহ লয়ে, ক্ষেপাহর ক্ষেপা হয়ে,গুণ গায়ে করেন রোদন। নাছি ছাডেন স্নেংহতে, শেষে চক্রী চক্রেতে, সভী দেহ কাটেন ভধন। একান বণ্ড হইল, যেখানে অঙ্গ পড়িল, মহাপীঠ হৈল সেই খানে। তবু শিব না ছাড়িয়ে, সেই সব স্থানে গিয়ে, ভৈরব হইল তা রক্ষণে । আর দেখ প্রাণস্থী, জীরা-दम्ब तम कानकी, इद्य देनद्य शन नदस्य । मीका त्मादक রবুপতি, শোকেতে কান্তর অতি, কেন্দে ভ্রমে **অরণা** ভিত্তর। কর্মা করে সুগ্রীবেরে, সীতার উদ্দেশ করে, সেভুবন্ধ কৈলা ন্যুগরেতে। বানর সহায় করি, রাবণেরে বধ করি, ভবে রাম खेकातिन नीटक। रमथ रमथि व्यात इटन्म, श्रुक्रटक्मा कर मि: क्षा भूक्षात्वरण स्थमन स्थान । भितीरणत रक्षा स्था, मात्रीत करत जान तमा, जाननार्त ना जादन जानन है व वरन कि क्रिको, काका भागात हा किल्माती, कमलिनी आमा ্রেখানে দেখারে থাকি, রাধা হা का का देशका विश्व । मस (छाउन

কুতৃহলী, সংসারেতে ফলাসক্ত হও। সে মধু পান কারলে। কোন ফল নাহি মিলে, কৃষ্ণ পদামুক্তে ব্লভ হও॥

জ্রীক্লক্ষের সহিত রুদ্দার পুনরুক্তি। রাগিণী ভৈন্নবী। তাল জৎ।

ছলে কলে জীরাধার হরিছে মান। পুনরায় স্থাম-রায় মনে ভাব অপমান। ভাহা আহা মরি মরি, কিবে সরল ভূমি হরি, বধে রমণীর প্রাণ আবার কর অভিমান॥ ধ্রা

প্রার। রুদা ক্ছে ওলে বঁধু বলিলে বিস্তর। এ কথাতে नष्ठेतत कि मित छैद्धः॥ लृगि नथा तमभग्न तनिक अधान ॥ যেকথা কহিলে নথা ভাল ছলে প্রাণ॥ বল্লে থে রাধার মানে সেজেছিলে যোগী। তেই মধ্পুরে এলে হইয়া বিবাগী। পাষে ধরে শ্রীমতীরে োধছিলে বটে। তার জালা তারে বিনে অন্যে মাহি ঘটে। তেবে দেখ দেখি ক্লঞ্জামা বি-হনেতে। কে আর রাধার আছে এ তিন লোকেতে। কুৰু ত্মি জ্ঞীরাধার মান অপ্যান। তাই হে তোমার বঁধু করে অভিমান ॥ আগনিত জীরাধার মান বাড়াইলে। আদরিণী নাম তার আপনি রাখিলে। ভালবাস বলিয়ে চে ভাই কম-লিনী। তোমার উপরে হয়েছিল হে মানিনী। <mark>তোমার</mark> রাধারে আর কোন প্রয়োজন। কুক্তারে লইয়ে হরি কর কাল্যাপন। তাবে যত ভালবাস বৃকা গেছে ভাবে। রাধা মলে কৃষ্ণ তোমার কিক্ততি হইবে॥ আর কৃষ্ণ রাধানামে किया सूधा आदि। भारती अथन वात्रीकृत मधु कृतारमध्य इन्मायरन हिटल यत्व निकुक्ष विश्वति। तांधा वटल तांधानांध বাজাতে বাঁশরী। কও হরি সে বাঁশরী কি বলে বাজাওর 'কার গুণ ভামরায় মুরলীতে গাও। মরি মরি ওঙ্গে কুক্ কি**গুর তোমার।** দোষ খুন্য <sub>ব</sub>কিবা দেখি কলেবর আর্ मकुल द्यारवंत द्यावी (यात्रा छक द्यान। त्याय नाकि विद्वार्क्ति क्रिक नीम अस्त। अहे (बाटन क्रांस) वृति क्राइ क्रिक्स 

শারা অখল অন্তর। খলের বার্ডা কিছুই জাননা নটবর। বিবেচনা কর দেখি ওহে দয়াময়। তোমারে যে প্রাণ সঁপে সে প্রাণ হরোয়। মবে মরুক সে ব্লাধা ছেতাতে নাই ক্ষতি। তাই বলি চন্দ্রবিলীর কি হবে তুর্নীতি। যার তরে এমতীরে বিসক্ষন দিলে। তারে বা কোন বংশীগারী সুখেতে রাখি-লে॥ কুফ হে তোমার মত মন পেলে পরে। এর সমুচিত ফল দিতাম তোমারে॥ কি কহিব কুক্তাবে ওহে দয়াময়। এক জনের আশাধন কেমনেতে লয়। ভারে মিছা দোষ।দই কর্ত্তা তুমি যার। যেমন দেব ভূষণ বাহন তেন্নি তার। হায়ং কি ছুদ্দশা হয় মথুরার। চোরে করে রাজকর্ম একি চমৎ-কার। গোর্ষে গোর্ষে রৌদ্রে মাথা শুদ্ধ হৈত যাব। ভার শি-রে রাজ ছত্র একি অবিচার॥ ওহে রুক্ড ভোমার আক্তন্ত সব জানি। কে জার যমুনাম বল বাহিবে তবণী। রাজা হলে হলে বল্যে যাবেন। এ দেখি। চরচির খ্যাত আছে ভোমার পৌৰব। গেল গেল দিন গেল ওরে মন্ত মন। দিনান্তরে क्रक नाम कत छेक्रीतन ।

> কুজার মহিত পুরবাদীর কথা। রাধিণী ক'রোদ্ভা। ভাল খেমটা।

া দেখনে কুক্তা এনোগো ত্বায়। তোমার ছরিকে আজি ছরে লয়। অকস্মাৎ এসে, পীতবাদে অনায়া-

েস, রমণী এক লরে যয়॥ ধ্রু॥

ত্রিপদী। বৃষ্ণ বৃন্দ। ছজনায়, এই মত ছন্দা হয়, দেখি পুরবাসী এক নারী। জন্তঃপুরে প্রবেশিয়া, কৃবুজারে সন্তাধিয়া, কাতরেতে কহে ধীরী ধীরী। ওগো ওগো রাজরাণী,
আজি বভ নৃপম্ণি, ঠেকেছেন দারুণ দায়েতে। ব্রজে হতে
একনারী, বৃন্দা নামে অনুচরী, এসেছে গো রাজার সভাতে। কেনার অধিক চেয়ে, কত বলিছে রুষিয়ে, দেখে শ্রাম
ক্রিরের ভরেতে। যেন গো ধারেন ধার, সে নারীর প্রেমধার,
ক্রিরিক্থার কথাতে। যে বৃন্ধি রুদার নুন, ভাহে বৃন্ধি
ক্রিরিক্থার কথাতে। যে বৃন্ধি রুদার নুন, ভাহে বৃন্ধি

কুরাণী, চক্ষে নাহি দেখি শুনি, রমণীতে এমন ব্যাপিকে॥ বাক্যশরে নুপতিরে, দদা জ্ব জ্ব করে, থর থর কাঁপ্রে রা-গেতে। ঝর ঝর যাম ঝবে, জ্রীকুঞ্চ মাজ্জন কবে, আপনার পীত ব্যনেতে। তেমো হৈতে প্রিয়জন, শতগুণে সেই জন, বোধ হয় ব্যভার দেখিলে। **আজি বা** ছুর্কুল যায়, পুন: মু-ষিক হতে হয়, দেখে এসো কি কর বসিয়ে ॥ গবা**কে**র **ভার** দিয়ে, শীত্র দেখে এমে। গিয়ে, কালাচাদে গ্রহণ **হয়েছে।** রন্দা রাভ আচ্ছিতে, আসিয়াছে সে গ্রাসিতে, কালশনী বিপাকে পড়েছে। কণেক যদি গো রাণী, স্থিতি করে সে কামিনী, দর্বাঞাস করিবেক চাঁদে। এবে কর দরশন, इই-য়াছে যে গ্রহণ শেষে কেন ডুবিবে বিযালে। এতেক বচন শুনি, শিহরে ফুভন রাণী, বলে ওলো কি কথা শুনালে। কোথা হৈতে এলো রুন্দে, হরে লইতে গোবিন্দে, শুনাকার হেরি যে শুনিলে। অফাদের শিরোষণি, সেই বাকা নীলম-ণিন দেখে কেবা লোভিত ছইল। চোরের উপরে চুরি, করে কেলে। সহচরী, আনি ভার কি করিব বল ॥ খা করেন দ্রা-ময়, ভাই হইবে নিশ্চর, কাব কবে হন কেব। জা**নে। কে** ভাঁরে পারে লইতে, যন্তাপি না চান যেতে, যাইলে রাখিবে কোন জনে। হরিনাম জপ মন, এ সংসার ভাকারণ, সেই মাত্র সকল জানিবে। রবি স্কুতের মন্দিরে, যাইতে না হকে ফিরে, জঠর যন্ত্রণা দুর হবে।

অক্রের শ্রুতি দৃতীর ভৎ দন।
রাগিণী হেহাগ। তাল জং।
অক্রে বল বল হে তোমার মন্ত্রণা কেনন। কুন্ড ব্রজের জীবন, রাধার সাধের ধন, এনে অনায়ানে কুবুজার করে করিলে অর্পা। ধ্রাঃ

প্রার। এই কপে রুদ্দাদূতী ক্ষেত্র সভাতে। অক্রের হেরিয়ে কিছু করে বিনয়েতে॥ ওচে মহাশর বুরি জুরি হে অক্রে। না হে বিরাছিলে জীরুন্দাবনেতে। তোমা হৈতে গোপিকার ঞ্দশা ব্রজেভে। কিগুণেতে ভেমোর ধার্মিক লোকে ক-র। বুবেছি তোমার যত আছে ধর্ম ভয়। ধর্মাধর্ম ভয় যার थाक (इ महीरत। एम नांकि अमन करत नांदी वंध करत। আমাদের প্রাণধন নন্দের নন্দন। প্রধনে লোভিত হ-हैल कि कांत्र । मञ्जा कित्र । इटल अटन क्रव्यन । दिस्सन করে কুবুজারে করিলে অর্প।। মনেতে তোমাব কিছু দ্যা না इहेल। বিধি কি তোমার মন পাবাণে গঠিল।। অ, ক্রর সরল ওহে যেই জন হয়। সে কন্মু হে এ আগুণে হাত নাহি দেয়। ধর্ম ভর যে জনার থাকরে মনেতে। সে কি পারে হেন ৰূপ অবলা মজাতে।। অক্তুর ধবিয়ানাম হলে ভ্নি বল। আছে বত ধর্মভয় জেনেছি সকল।। তোমার মালায ধিক ধিক ভিলকেতে। ধিক ভোমার ধর্ম কর্মা ধিক ধর্ম পথে।। তোমারে আমারে ধিক ধিক জীক্লজেরে। ধিকাধিক ততোধিক ধিক জীরাধারে।। যদি বলি জীমতীরে থিক দিলে কেন। তাহার র্ণ্ডাস্ত কিছু তবে কহি শুন।। সাধারে দিলেক খিক এই সে করিণে। কেন প্রেমে মজেছিল লম্পটের ম-📭 ॥ যেতারে নামনে করে কেন তার তরে। এম দায় ব্রীণ দের আত্ম ভেবে পরে॥ ক্লফেরে দিলেক থিক এই মর্স্ম তীর। না রাখেন যে জন শরণাগত তাঁর॥ ধিক দিলেক স্থাপনাকে নিবেকী হইরে। পরে অক্রের কথা শুন মন দিয়ে॥ এত যদি রুশাদূভী কহিল অক্রুরে। শুনিয়া অকু-त छटव छेड्डा छत करत ॥ दक्त त्रांक क्रांक वन वन आगारत। আমি হে অক্রুর ক্রুর নাহিক শ্রীরে। তোমাদের ভাগ্য হৈতে এসেছেন হরি। মোরে কেন মিছা দোবে নিন্দহ স্থ-শ্রী। কংসেরে বধিয়া ক্লক্ষণক্র বিদাশিল। জাপনার পিত। ৰীতা উদ্ধার করিল।। কুজারে আপনি রাণী করেছেন ভক্ত বংসল ভক্ত বাঞ্চা সিধিকারী। ভক্ত প্রেম ডে।-ৰাধ্য কালীয় দমন ৷ ভক্তি ভাবে যেই ভাবে তার উনি का किया करा का का जारम । क्योरत करतम ছঃখী স্তথী ছঃখী জনে ॥ অপার সংসার মন যদি হবে পার । দিনাস্তরে কুষ্ণ বলে ডাক এক বার ॥

> উদ্ধবের সহিত রুন্দার কথোপকথন। রাগিণী মূলভান। তাল থয়ের।।

কি কারণে উদ্ধান রহিলে হে মৌন মনে। আপ- । নিতো ব্রজের দশা দেখে এসেছ নয়নে।। ভাই ভাবি হে এখন, যাদের কাল বরণ, ভারা কি হে স-

লবু-ত্রিপদুী। তবে রুফাদুতী, উদ্ধবের প্রতি, করুণা বচনে কয়। কও কি লাগিয়ে, নিরব হইয়ে, রহিলে হে **মহা** শয়॥ তুমিতো ঘাইয়ে, এসেছ দেখিয়ে, গোকুলের সমা-চার। আছি গোকুলেভে, মোরা যে সুখেতে, যেই দশা জীরাধার।। জেনে কি জাননা, সে কথা বল না, তোমাদের ভূপতিরে। মৌন হৈয়ে কেন, রও কি কারণ, কেন বাক্য माहि मत्त ॥ किছू উপकात, कत खरलात, উপकात धर्म হয়। মোরা হে রমণী, অত্যন্ত **চুঃখিনী**, নাহিক কো**ন আ**দ শ্রম। কালাচাঁদ লাগি, হয়ে। সর্বত্যাগী, কুলেতে কালি দিরাছি। কোথায় দাঁড়াব, কার কাছে যাব, কেম**নেতে বর্ল্** বাঁচি।। অমুভব করি, নির্দয় 🕮 হরি, আর নাহি ব্রজে যারে 🎚 সদয় হইয়ে, নিজ্জ নে লইয়ে, বুঝায়ে বল মাধ্বে ॥ পুণাঃ বান তুমি, গুনেছি হে আমি, তব বশীভুত হরি। অষুলার তরে, অনুগ্রহ করে, 🔫 কিছু সহকারী। ভুমি বৃক্ষাইলে, যদি হে গোকুলে, স্থাস গোকুলের পতি। রহে মম মান, वाँहि द्राधात थान, इहैदव छव सूद्याछि।। यावर वाँहिव, छव -গুণ গাব, এ যদি পশ্ব করিতে। মেদিনী পুর্বিত, হইকে নিশ্চিত, তব গুণ দৌরভেতে IL যার তরে মোরা, ছতেছি হে কার। তার তো শুনিলে ক্থা। হরে কুল মাল পুনঃ বৈক্ मान, कि आंद्र करिय कथा।। कालात राजात, रमस्टित अर्थ गात, एम हेन्द्र। कृत शहन। कथा ना कहिएत, साह द्वा ही है TCA NOT O MENTE OFICE IL COLOR DE STOR TON THE STORE OF T

মাহি কোন প্রয়োজন। যা আছে ভাগোতে, কে পার্রে খ-্রভাতে, বিধাতার যে লিখন।। যদি প্রাণ যায়, বিরহ স্থালায়, छा ७ वतः श्राटन मत्त्र। ७ तत्र माधित ना, कृत्थं कानात ना, ইথে যা হবার হবে।। দয়া মায়া ফত, ওঁতে অবস্থিত, যেমন আছে জেনেছি। কথার কৌশলে, বুঝেছি হে ছলে, ও প্র-য়াস ছাড়িয়াছি।। আমরা কামিনী, মিছা কাঙ্গালিণী, হই किन कांत्र जात् । तम कि अ तमार्थाना, मान अ कारतमाः शास्त्रत যে ভাব পরে।। পরেরে আপন, ভাবয়ে যে জন, সে জন নিৰ্কোধ অতি। তবু সে প্ৰত্যাশ, না ছাড়ে আখাস, কি জানি ছে কি কুরীতি।। ইচ্ছা হয় যেতে, পুনশ্চ ব্রজেতে, না যায় ভাতে কি,ক্ষতি। বিভব বেড়েছে, সমান হয়েছে, নাম হণ স্নেছে নৃপতি।। আরতো এখন, গোর্ডে গোচারণ, শ্যাম নাহি প্রছে মনে। আহিবীর নারী, কেমনেতে হেরি, ব্যভার করে এক্ষণে।। মোরা লজ্জাহীন, তেই জন ভিন, তার আশা কেন করি। সহজেতে নারী, বুঝিতে হে নারি, অতি অপ্পা বুদ্ধি শ্বরি।। গুণের সাগর, ত্রিক্তক্ষ নাগর, যেমন প্রকাশ হৈল। জ্মামি কি কহিব, শুন ছে উদ্ধান, তিন লোকেতে জানিল।। কৈতে হাসি পার, একি খাট দার, এ কথা কহিব কার। ও প্রাক্রের বে জন; লয় হে শরণ, তার কি এ দশা হয়।। এমন ক্লানার, না দেখি বিচার, কভু প্রকার উপরে। এই মুখে-ক্লেক্সে, করেন রাজ্য, কংসের এ অধিকারে।। কুবুজা লইয়ে बिक्ट देश रेहरस, थाकून नथताशिक। शुरह हतन यहि, वथा ক্রায়মাই, হকু মোর ষেত্রগৃতি। গিয়া রুক্টার্ডন, আপন নরনে, क्रुश्च (मट्थं क्याचात्। क्रांत यिन वन, स्मादत दक्त वन, धहे রে কারণ তার।। তাই হে তোমারে, সানাইস্থ ফিরে, ইথে। ষের। মনে, লয়। মথুর। মধ্যেতে, দব শরীরেতে, আছে কিছু क्रमा ७८व वृक्षो ভात, काल बश यात, जात मन क्रिया क्षा एक वर्तन, जादत दह कथन, जान नाहि इस मदन ॥ स्य के सम्बद्धित्वाविकान, ज्ञान कत्त्व यज्ञता हुन्छ। स्वर्थान

রুন্দার প্রতি উদ্ধবের উক্তি। রাগিণী বেহাগ। তাল আড়া।

ওগো বৃদ্দে সই আমায় দোষী কর অকারণে। কৃষ্ণ কার নহে বাধ্য অসাধ্য সাধি কেমনে।। শুন সার বলি তোমায়, বংশীধারী বক্র যায়, কে করিবে রক্ষা তায়, কি হবে কাঁদিলে বনে।। ধ্রু।।

ত্রিপদী। রুন্দার বচন, শুনিয়া তথন, উদ্ধব বিনয়ে क्य । शुन ब्रन्म हुनी, वाधात छ्रांकि, मिश्री हि निष्ठा नय ।। মোর বাক্যে দৃতী, যদ্যপি এপিতি, যাইতেন ব্রঙ্গপুরী। তবে এত দিনে, এনীল রতনে, পাইতেরা। সহচরী।। আমি দেখে এলে, রুশ্ডকে কহিলে, ভবেতো এসেছ ভূমি। যাইবার হৈলে, ভবে কোন কালে, লৈয়া যাইতাম আমি।। পরি**শ্রম** করি, ওগো সহ চরী, কেন এলে মধুপুরে। আমিতো যাই÷ য়ে, এসেছি কহিয়ে, আর পাবেনা খামেরে। কেন কুবচন, ৰল অকারণ, ভোমাদের দিন গেছে। কান্দিলে কি হবে, এক্ষণে না পাবে, যে পর্যন্ত ভোগ আছে।। কেন অকারণ, করহ রোদন, গমন কর স্বস্থানে। ব্রজ লীলা শেষ করে ఈ বীকেশ, এরেএলেন এখানে।। অতএব সংখী, কেন বল দেখি, आभागां कर बार । बागा रेट्ट वन, रहेरव कि कन, कि বা সাধ্য হে আমার ॥ যাহার নামেতে, তরে বিপদেতে, সে যারে বক্রন্তা হয়। তারে কোন জন, করিবে রক্ষণ, হেন জন কে আছয় ॥ ও প্রাণ সজনী তিনলোকে যিনি, বুদ্ধি বর্ণ मान करत । जामि शा त्य जरन, त्याव कि खरन, मिथा কেন বল মোরে।। যা জান মনেতে, বলছ সাক্ষাতে, আমারে क्ति कर्णा । गांधा कर थारक, वल गुकी औरक, रम स्वर्ष পার নে যাজা। আমি হে যেমন, হেন কত জন, জাছে এ মপুল্লাপুরে বিক্রির স্থী, উপায় না দেখি, কি ছবে জাল নার্ট্র মোরেটা তোমাদের মন, করিয়ে হরণ, যে জন 🐃 द्रदृष्ट् छः शी । यह हेन्स्। इस, कत्र कारास, क्रायी नहें हैं। 不利用

## PEN TAIL

## প্রীক্ষুকের প্রতি রুদার উক্তি। রাগিণী বিবিট। তাল খেমটা।

ক্ষে এই কি মনে করিয়েছিলে। ববে কুলবালা।
ওহে কালা, গশোবকালে দেশ ছাড়িলে।। ছিছিছি
খ্যামরার, ইথে কি ধর্ম সয়, তুমি হে কেমন দরাময়, ত্রজের লীলা ভূলে, আসি বলে রাধায় ভাসারে
এলে জকুলে।। ধ্রু।।

' পরার। উদ্ধবের কথা শুনি রুন্দা বিনয়েতে। নিবেদন করে জ্রীক্তব্যের চরণেতে। রন্দা কছে প্রামরায় সকলি 🐯 নিলে। উদ্ধবের কথা শুক্তি ভৃষ্টতো হইলে।। আমি সেটা মন্ত্রে জানি ভোমার যে মন। তবু এনেছিহে করিভে সন্দেহ ভক্তর।। ভাল ভাল তাতে খেদ মনে নাহি করি। কিন্তু এক **কথা আছে শুন ও**ছে হরি।। গোকুলেতে রাধারুঞ ছিল রাধা হৈতে। তব নাম ছিল রাধা নামের পশ্চাতে।। রাধার व्यक्ति नौसू देश्दत हिटन श्रति । श्रूनः दम व्यक्ति वश्रु देनदम् ছভো হরি।। এবেড কুবুজা রাণী ওহে নিরদয়। বল দেখি 😁 নিহে নামের পরিচয় ॥ १ কও কি নামে বিকাও মদন মো-হম। কোন নাম পবে নাম করেছ ধারণ।। কুজা ক্লফ কহে किंट् রাধা নাম গেছে। কিয়া ক্লঞ পুর্বামত রাধাক্লঞ आदह।। यदन कृष्ध यात नारम निक नाम पिटत । आशनि 🗱 লৈ খাট যে নাম লাগিয়ে। শেষে ক্লফ অনায়ানে ভুবাও हैंगे बीम। फिन तहबना ८६ न्यतशादर्थ तदव नाम।। वित्रह परंतरक आन रनन रनाशिकात। हैटथ किছू शुक्रवार्थ हरवना ভোষার দ লোকেন্ডে ক্লিছিবে ভোমায় রুমণী **ঘাতক। তু-**বিতিত হইবে শাস ইয়ার শাতক । শরণাগভারে ভ্যাপ করে देवे बात । करें नम भूत नाहि पाकिन पूर्वानी की विका नकी विकास के मह की हति। की हिंद्र के द्वार कार्य करा ক্ষা পাল বন্দ ছয়ের ঘোষণা থাকে যায়। স্বৰ্ধা ও কৰা পোলে বাৰে শামরায়।। প্রেম থেকে নোরা যদি মরি হে देव वर्षा क्रिट्वक गर्सकत्न ॥ शदराशकात्रादर्भ

প্রাণ গেলে খেদ নাই। গুণাগুণ বেঁচে তব রবে হে কানাই।। डाई विल क्यू ज़िंग कि छन जानत। केंकि बिरस जान नाम রাখিলে নাগর।। তব সঙ্গে কথা কছা নয় বনসালী। প্রাণ কেন্দে কেন্দে উঠে পুনঃ তাই বলি।। বোষার মতন কেন রহিলে বৃসিয়ে। প্রভাতার কর কিছু ঘাইহে শুনিয়ে।। যেন কত্ব শিষ্ট শান্ত সরল সুজন। দোৰ হীন জন যেন তেমজি লক্ষণ। কি গুলে ভোমার গুণে তবু ঝুরে মরি। ইহার মরম किছू वृक्षिरछ ना शांति॥ विगन कृष्टि अध क रेश সূজিল। আমাদের বলে নয় কত দেখাগেল।। দেখ র্বি কিরণে পাল্লনী প্রকাশয়। পিরিতের গুণে সারাদিন দক্ষ হয় চাতকিনী অন্য বারি না করে ভক্ষণ। উচ্চেশে ধেয়ায় নবনী-রদ কারণ।। চকোরী ক্ষুধিত থাকে চ**দ্রু সুধা বিনে। ভর্** ক্রাশা নাহি ছাড়ে প্রেমের কারণে।। প্রতক্ষ ক্লনলে দেখ পুড়ে হয় খুন। তথাচ ভয়ার্ত্ত নহে দেখিলে আগুণ।। তাই বুঝি সভা ভাগি করিছে না পারি। কর্ম্ম গুণে তব সনে ছন্দ দরি হরি।। ওরে ভান্ত মন জপ রাখাকুক নাম। অন্তে না কুঠান্তে ছোঁবে পাবে মোক্ষধাম।।

> রন্দার প্রতি শ্রীক্লখের উক্তি। রাগিণী ভৈরবী। তাল জং। -শুন শুন গো প্রাণ সজনী। জামি দেহ প্রাণ কমলিনী। জাগ্রতে স্বপ্লেতে, ধ্যানেতে জ্ঞানে-তে, রাধা তির জন্য নাহি জানি। ধ্রু।

नच्- जिन्मो। इन्मात वहन, करिया खावन, উद्धत कर्त्रम रित। अर्था पूछी रकन, विना मार्थ एकन, कर्षे कर महहती। देवन चित्र रहेन, रताय एक्पाशिरम, महरक खवना खाछि। क्षित्र इसमा, वृक्षिण भारता, खुन्म कर्ता था कि तीकि। देव-प्रमा खेळा, इन्हें क्ष्मेना, कर्य मुगाया ना रस। जुनिएका था। पूछी, वह क्ष्मिकी, कर रशामा अछ नम।। धरत रमान स्वास्त्र इसि कर क्षाय, कि करिएक शामि शामि। दक्षामारमा करिक

त्महे नाल कांद्र, विक्यूकः ला विष्ठाति ॥ मधुतात पृष्ठी, हत्त-ছি ভূপতি, সব কি গেল তা বলে। তব রাজা ভান, আছে মোর প্রাণ, বাঁধা দে পদকমলে। রাজ্য ছত্র ধন, মব সে স্থা-ব্রণ, সেই রাধারি ইচ্ছাতে। কছিব গোকত, মোর সাধ্য য**ত**, সরতো জ্ঞাত ভোমাতে। রাই আক্ষা লয়ে, কোটাল হইয়ে, ক্রঞ্জ করেছি রক্ষণ। ত্যাজি নিজ মান, রাখি সে সন্মান, সাধিত্ব ধরে চরণ।। রাই রিনা আর, কি গতি আমার, তাকি জাননী (धा मधी। छाकिता तम नाम, लत्य कान नाम, मम नामा-প্রেতে রাখি।। সেই সে আমার, আমি গো তাহার, সমুর इंदर चरेना । एटव रम अकरन, इट्ठेंद्र इबदन, किकानि विधित মন্ত্রণা। সেই কমলিনী, জিনি কমলিনী, আমি জান সরো-বর। ওগো সহচরী, কি ভন্ন রাধারি, হকু হই স্বতন্তর।। না वृक्तित्त मर्ग्यु, करतिष्ट्र ७ कर्म्य, नकनि कि चूल शिल। तिहे স্ম হবে, সকলি হে সবে, মিছামিছি গালি দিলে॥ শুন সহ-ট্রী, এক ভাবে নারি, চিরকাল কাটাইতে। নে কর্মেতে দুক্তী, নাহিক সুখ্যাতি, কুখ্যাতি করে জ্গতে॥ শুন বহচরী, এই হেড় ডরি, আর ইচ্ছা নাহি হয়। শিশুকালে যত, হয়ে ছে কুরীভ, পশ্চাতে ভঙ না রয়।। সকলে গোকুলে, মোর লামে জলে, কেহ না বিখাস করে। আনি ছ্রাচার, রমণী শ্রার, হরেছি হে ত্রজপুরে॥ ছিছি প্রধন, করেছি হরণ,নব ঘৌরনের ছোরে। বিধাতার পাশে, শেষে অনায়াসে, ভূগিতে इंडरित त्यादत ।। এटा ला जकनी, कान अमाशिनी, कांछात्र-भीत विकादक। त्म कर्त्मा अथन, तक देशक मन, नार्वि हारह কোন মতে।। প্রহিংসা আর, করিতে আমার, সাধ নাহি জ্বপ্রস্থ। পরেরে সন্তাপ, দিলে ছার শাপ, ক্ষম ভোগিতে हुत्र ।। काडकाव गथी, जाना खाटन थाकि, छुनाम ना तरह खाटना क्षकत श्विकित्क, त्यांच करमा हित्क, धर्म कर्म नाहि माति॥ कि जिल्ला नथी, धरेकर्भ थाकि, एएक गांकुका कृथाछि। स्तारक स्वम्म, इरेट्ट फथन, गारेट्ट कहा फर्माचना

শ্রীকুষ্ণের প্রতি রুদ্দার উক্তি।
রাগিণী বাগেশ্বরী। তাল বাহার আড়া।
কে বুন্ধে তোমার লীলা মুরারি। মর্গ্ম ভেদ করে
রাধার হলে এখন ধর্মাচারী। দয়াবন্ত শিফ্টশা–
ন্ত, যেমন ভুমি রাধাকান্ত, জানা গিয়াছে নিভান্ত, রাধার দশা হেরে হরি।। ধ্রু।।

ত্রিপদী। শুনি রুদা কয়, ওহে রস্বায়, একি হে কথা শুনা-লে। একে জলে মরি, ওছে বাঁকা হরি, ছংখের উপরে হাসালো।। এত ধর্মা ভয় কহ রসমর, কত দিন হইয়াছে। সিছা জানাওনা, ছলনা করনা, সকলি হে জানা আছে।। পর **তুঃখেতুঃখী,হও**য়া বাঁকা আঁখি, আছে কিংহ তব মত। আ**হা** মরি মরি, সম্প্রতিতে। হরি, কংলের করেছ হত।। কোন জ্ঞানে হরি, নিজ করে করি, রজকেরে সংহারিলে। এ কর্ম্ম শ্রীপতি, বড়ই সুখ্যাতি, তব হয়েছে ভূতলে॥ ছিছি রস্নাল, पुर्मि (इ निर्माक, उ है এव कथा कुछ। इहे बहुछ नाती, वृद्धि-তে হে পারি, ও কথাতে কি ছুলাও॥ পূর্ণ কৃৎসা যার, ওছে স্থামরায়, এ কথা ভার কি দায়। একি হে কৌতুক, শুনে বাছে ছঃখ, যে না জানে বল তায়।। তা অ বিবরণ, আপনি বর্ণন, কবিলে বড়না হয়। ভূমি হে যেমন, জানে সর্ব জ্র কেন দেও পারিচয় ॥ ভাঙ্গিলৈ হে মন, হয় কি এমন, ধন্য मिट्टे कूर्युकारत । अट्ट खनितित, अमन उपित, निम्नारहन একেবারে।। আমাদের উপরে, যেন বিষ করে, পেয়েছিল কোথাকারে। ত্রঙ্গের রুপ্তান্ত, হৈলে হে 🗐 কান্ত, যেন 🦓 शर्फ़ निरत्।। रक्यरन विलाल, छव नार्य खरन, मर्स क्रेस् গোকুলেতে। কি কহিব হরি, গেলে ব্রজপুরী, সকলি পাঞ্ पिथिए ॥ अहे पार्थ इति, देश्य कूलनाती, ताक मार्क এবেছি। বুরে দেখ মনে, ভোনার কারণে, যে সুখেতে সবে আছি।। জুমি দয়। হীন, মোসবারে ভিন, ভাব আপনা-র **ও**ণে। ক্রালে সব হয়, তব দেখি নয়, কি না হয় বল ধুনুৰু 🖟 তুপতি হইরে, কুবুজা লইরে, সুখে থাক থাক আম। জারী

एक कना, छोशादित वेक नी, केंद्र देश्टल इस बीम ॥ किस मिश्रीय-ते थे देश हर, मत्नों मधि देशक रता। सूर्व भिक्काद्रत, देलद्रा, वीत्रत्यद्रत, वनाहरण द्र यक्दन ॥ थे है निश्हामत्क, श्रीताधात गर्दन, विनिद्ध द्र यिन हित । छद्यक मकल, इहें के मकल, थ तीका धन कामादि॥ खद्रत पृष्ट मन, विवस्न किक्षन, छान कत्रह यक्दन। क्रकार प्रकार का क्री हहेंद्र समरन॥

জ্ঞীকুষ্টের প্রতি কুন্দার ত্রজে যাইবার কথা। রাগিণী ললিত। ভাল আড়া।

নতাতি শ্রীপতি বলো ব্রজে যাবে কি না যাবে।
জনাথিনী আহারিণী নারীগণে কি মজাবে॥ যে —
বুঝি ছোমার পণ, পাইরে কুবুজা ধন, তাজিলে
শ্রীর্ন্ধাবন, হেন লয় মন। শ্রীমুখেতে প্রকাশিয়ে,
যা হয় বল হে কালিয়ে, আমি গৃহে যাই চলিয়ে,
প্যারী নয় মরে মরিবে॥ ধ্রু॥

পরার। পুনঃ রুদা জ্ঞীক্লফেরে কছে ক্রোধ মনে। আছে - वें चू কাষের কথা বলহ এইক্ষণে। যাবে কি না যাবে স্থাস 🔊 রুদাবনেতে। সভা করে বল স্থা শুনি 🕮 মুখেতে। ৰুক্ত্রৈছি হে অভিপ্রায় আর নাহি যাবে। না করিবে অভাব ক্রুজার নব ভাবে। বুঝেছি হে আয়াদের কপাল ভেঙ্গেছে। ক্রার কুণ্ডেতে কালো মাণিক তুবেছে। আর নাহি পাব ে কুণ্ড হইতে। নাহিক সে ধন ভোগ রাধার ভাগ্যেতে হৈ হেন বুন্ণী কৃষ্ণ তব ভাগ্যে নাই। ২কু হুকু সুখে থাক স্থিতি মোরা চাই। তোমার সুথেতে সুখী ছংখী তব ছংখে। ভূমি সুথে থাকিলে হে সুধী সেই সুখে। কিন্তু কৃষ্ণ মনে বৰ এই থেদোদর। এবে বুঝি প্রেমত্ত উজ্জাপন হয়। ব্রে নাহি রম্ণীতে মজিবে পিরিতে। খোঁটা দিলে শ্রাম্ ক্রী পিরিভের রভে। ক্লুক্ত কন সহচরী কেন বার বার। ঐ ৰুখা পুনঃ পুনঃ নিন্দা কর আর । মিছা অন্দ কেন কর আ-মার সহিতে। তোমায় যে অপারক হৈলাম বুরাতে। কোন ज्यानिक क्रिया वृश्वित क्या भटन। जात्र मानि याव नारि

শ্রীক্ষের সহিত্ কুজার কথোপকথন।
রাগিশী সুরট। তাল আড়া
কুঞ্চ বলোহে আমায়। কোথাকার এক নারী
নাকি লৈতে এসেছিলো তোমায়। তব সহ করে
দ্বন্দ, কত বলে গেল মন্দ, শুনে মনে হয় সন্দ,
পাছে লয়ে যায়। ধ্রু।

ত্রিপদী। রন্দারে বিদায় করি, অন্তঃপুরে যান হরি, দেখে কুজা কাভরেতে বলে। কহ দেখি নৃপ্নাণি, সভার র্ডান্ত শুনি, কেটা এসেছিল রন্দা বলে। মহারাজ কিরের ভিনে, ভোমারে ভৎ সনা করে, সে নারীর করেছ কি ধার কেবা সেই হর নারী, কার বা সে অমুচরী, ভোমার সঙ্গে সম্পর্ক ভার। রাজা হরে অমুযোগ, কে কোথার করে ভেনি নারীর কে এত রাখে সান। অমুভাবে বোধ করি, নহে বে সামানা নারী, বুঝেছি হে হবে মান্যমান। ভাবে বুলি সামানা নারী, ক্রেমপক্ষে সে সপক্ষ,কারু যেন পক্ষ সে সক্ষরী নিগুড় ভাব না থাকিলে, এত কেবা কারে বলে, কেবা এত সম ওহে হরি। অবশ্ব হে বংশীয়ারী ভব প্রেমের বিদ্যারি, বেনারী কি হবে জন্য জন। ভালবাসা না থাকিলে, প্রেমের

कि किया, बरमा के उसे बरमा कर गर्मा देवन हर केमरमा दिक्की अहार महाताक जूमि, जान त्यन जानवाता आहरू मा दियात्म पांशा निरंत, कार्त महन्य कार्निहरू, रग तम्शी क्षांक्र कि मद्मरहा। इलि शिविट्ड विटब्ह् में, अंडरम्ब नाइड् रबंद, जिल्लाउदा तकर नटर सूथी। कटल कुटल मजादाह, করে প্রেক্ক ভালিয়াছ, আপনিত আছ দেখি সুধী। যথার্থ পিন্নিত হৈলে, সে প্রেমে বিচ্ছেদ পেলে, উভন্ন সমান ভোগ ভোগে। এত সে বিচ্ছেদ নয়, অনুভাবে বোধ হয়, যে নতে বিবাসী কোন রাগে। কিমা ওতে দয়াময়, খ্যান দেশে আদ হয়, ভোমার সে ভুমি নহ তার। উভয়ে থাকি-লে টান, সে প্রেমে না হয় মান, বিচ্ছেদের নাহি ধারে ধার ৰেখ হে মথুরা পতি, দেখে শুনে হই ভীতি, আনি অতি अधिनी तमेंगी। राम रह अखारत तहें, व करमात कमी नहें, বিচ্ছেদেতে বড় ভর গণি॥ এত যদি কুক্তা রাণী, হৈল वेणिया मानिनी, छेखत करतन ठरव इति। छन कुछ। पिरम মন, দে নারীর উপাখ্যান; মান্যমান বটে সে সুক্রী ॥ আ-মার প্রেমের রাজা; রুন্দাবনে রাই রাজা, রুন্দা তার প্রধানা বাঁছুণী। সেই রাজা ত্রীরাধার, ধারি আসি প্রেমধার, প্রেম মহাজন কমলিনী। আমি এনেছি পলায়ে, দে রাজারে না ৰ্জিনে, ভাই রুদ্দা এসেছিল লৈতে। তাই সয়ে বাক্যবাণ, কেনারীর রেখে মান, ভুষেতেষে বলিলাম যেতে॥ যার ধার ক্রিছে হয়, সে যন্তপি কটু কয়, তাতে ক্রোধ না করে পণ্ডি-ক্রেরিক্রিকের সে সময়, যেন শব হতে হয়, সে বচন না কানেতে। শুনি কুক্তা তুষ্ট হৈল, মানাগুণ নিভে পেল, नुकारक शृंद्रिण गर्क कांग्र। इस्क कर्श दिश्व करण, क्रुक वरण कि बूटन, क्रुक्तनान रान क्रुक्त भात ॥

শ্রীকৃষ্ণের প্রতি রক্ষার পুনঃ কখন।
রাগিণী সুরুট। ভাল আড়া।
শ্রাম স্থাতে এনেক্সভাই। পাপের ভাগী কেবা
হৈছে আপে মলে রাই। মরে মরুক কিলোরী,

## ভাতে থেদ সাহি করি, তুলি সুবে বাক হরি, 🥕 তোমারি মঙ্গল চাই। দ্র।

পয়ার। এই ছাপে রুক্ত কুবুজারে বুঝাইরে। পুনর্বার সিংহার্সনে বসিলেন গিরে 🕯 অত্নুচর কত করে চামর বাজন। পাত্র মিত্র লইয়ে করেন আলাপন ৷ ইতিমধ্যে পুন: রুক্তে আসি উপস্থিত। দেখি কৃষ্ণ সভাশুদ্ধ হৈল চমকিত। কৃষ্ণ কন কহ রুশে কিসেরকারণে। কি ছেতু অ।ইলে পুনঃ কি 🥦 বিয়েমনে ॥ রুন্দা বলে খ্যামস্থা ভেবনা মনেতে। আসি নাই কুষ্ণ কিছু ধন কজি লতে। তোমার ধন ত্মি ভোগ কর ওছে र्रात । उर्वे थटन आমि किছू नहें अन्मी नाती ॥ तांका इंड तांनी পাও সদা থাক <del>সুখে । ভূতন ধন খাইও কিন্তু কিছু</del> রে**খে** एएटक ॥ अथकरन रचन कूनुकार रश्रमधन। अमन करत तिरम्ह-प्तित्वकरताना अर्थन ॥ धटन अरन क्रस्थ ८२ कामांव त्य यकनी রাধা হতে জ্ঞাত হয়েছি ছে বিলক্ষণ। সে কথায় রুক্ত আর নাহি প্রয়োজন। যে হেতু এসেছি শুন করি নিবেদন। ভুমি-তো হে ত্রজনাথ ত্রজেনাহি যাবে। জ্রীরাধার পক্ষে আর সা-পক্ষ না হবে। ঠারে ঠোরে শ্রীমুখেতে করেছ প্রকাশ। সে আশায় বংশীরধারী হৈয়াছি নৈরাশ ৷ আর হে যাইতে **এলে** কবনা মুরারি। যা থাকে রাধার ভাগ্যে তাই হংব হরি॥ कि হবে ভোমারে রুঞ বিপদ জানালে। কোন **দাই** ভক্ষে ঘৃত দিলে। কি কল রুক্ষের কাছে কি **ছৱে** कान्मित्न। कि कन व्यवत्था वन त्वामन कवित्न। व्यत्यान রে দেখালে জালো কোন কল নাই। তোমারে জানী ছংথ তেমতি কানাই। আমি ব্রজে কিরে গেলে নিকুঞ্ বিহারি। জিজাসিবেন আমারে হে সে রাজকুমারী। শুকি-লে আমার মুথে নিরাশা ভোমার। তথনি মরিবে রাধা 🕬 माहि छात्र। कमलिनी रेमला छव वित्रहानरमञ्ज कि हरब পাপের ভাগী রমণী বধেতে। তাই বঁধু সুধাইতে এসেছি **कामादा। हेरात निकास कृष्य बनर कामादा। तमगी कि** শনি বৃষ্ণ আমি ছে অজান। তাই তোমায় জিলালিছে ইত্যুব বিধান। ভূমিতো হৈ প্রধান পৃষ্ঠিত ক্লাম্বার । বল দেখি স্ত্রীহত্যাতে কত পাপ হয়। ধর্ম ভঙ্গ থাকে যার নিকুঞ্জ বিহারি। প্রাণ গেলে প্রাণে সেতো বধে না হে নারী। তো-মার কি ভয় কৃষ্ণ করিতে জীবধ। বাঘের কি পাপ বল করিতে গো বধ। স্তীহত্যা করিতে তবআছরে ক্ষমতা। পুত-নাতে জানা আছে তোমার মমতা। এত যদি বুদ্দাদুতী ক্ষুক্তেরে কহিল। বুদ্দার বছনে কৃষ্ণ নীরব হইল। প্রথাম করিয়া দুতী নিজ স্থানে যায়। কৃষ্ণ কথা কৃষ্ণদান ভাষা-মতে গায়।।

> রুদার ত্রজে প্রভাগিমন। রাগিণী লালত। ভাল আড়া।

কি বলে রাধার কুঞে কেমনে যাইব এখন। যে ধন প্রয়াসে আশাসে ধনেতো হৈলাম নিধন।। এ কথা শুনালে ভাবে, হার।ইব একেবালে,

ছুবিদে ষ্মুনার নীরে, হেমাজিনী রাই। আমরা মরি যার তরে, সেতে৷ নাহি মনে করে, তবু পাপ काँचि त्याद्व, প্রবেশ না মানে মনে মন।। भुः।। চৌপদী। রুক্দা রুসবর্তী, হয়ে জুংখী অভি, কি করি সম্প্রতি, ভাবয়ে মনে। করিতে গমন, না চলে চর্ণ, বিখা-निष्ठ सन, थाता नवटन।। सन्त मन्त्र गर्डि, हटल द्रन्ताष्ट्रकी, বিচলিত অতি, হয়ে অন্তরে। বলৈ হায় বিধি, তোমার কি विधि, मिरा क्रकानिवि निल्ल ए इता। कि कथा विलस्त्रः শ্লাইকে বুকারে, সাস্তনা কি দিরে, করি রাধারে। এলেম বা কি বলে, যাই বা কি বলে, এ কথা শুনালে, হারাব তারে । কায় রে গোসাঞি, মোর মৃত্যু নাই, এ আলা তরাই, প্রা-शिख इतन। वाँ कि कूरथे एक, ना भाति वृक्ति एक, यम कि পাসিতে, ত্রাসে গোকুলে। হাই ছতাশেতে, চলিল ত্রজেতে, ' बंशिन बूट्यंट, ब्रमा सूम्मती। यह ध्यांशीवन, करत नितीकन, ব্রানন্দিত মন, রুপারে হেরি।। আগুসরি হয়ে, নিকটে আ-बिद्दा, ब्रुग्माद्र (रतिदा, कटर वहम । ও প্রাণ मञ्जनी, এলে

**कार्किनी, करें अन्त्रिमि, तम क्रक धन ॥ जादन क्रांन रही, द्विस** স্থামরায়, ছলিতে নবায়, লুকারেছে গো। না হেরে স্থামে-(त, প্রাণ যে বিদরে, বুঝি क्रक করে, সময়েতে গো । বল বল স্থী, কোথা বাঁকা জাঁখি, না হেরে গো স্থী,প্রাণে মরি। তোমার আশরে, আছি পথ চেয়ে, দেখিতে কালিয়ে, ও সহচরী।। তোমার কারণে, নীরদ বরণে, হেরি এত দিনে, যত গোপিনী। ছারাণ রতনে, পাব পুনং মনে, ছিল না গো মনে, @া। मजनी ।। (काशा तः भी शती, तृपा। मरहती, शका-তে কি হবি, আসিতেছেন। সংবাদ জানাতে, ভোমাবে আ-ণেতে, রুক্ত নিকুঞেতে, পাঠ।ইলেন।। বল গো তদন্ত, শ্বনি-शः हरु ख. २कु धःथ धारा, टाल दाधारतः। तकम इरस (भीन, भक्ति रहम, कुछ विवत्र १, अश्व मशीरत । द्वाप क्राप्त क्रा কৈতে প্রাণ যায় । দে কথা আমায়, আর বলো না। কপালে যা থাকে, পণ্ডিতে পারে কে, কব দখী কাকে, বিধির মন্ত্রণ ছু:ল রৈলে ভালে, দে পোড়া কপালে, কছু সুখ মেলে, ছেন কি হয়। খামাদের ধালা, নিতান্ত বক্তাতার কে করে জান্যথাত থাবশ্য হয়।। পত্নিশ্রম সার, আশার, সুসায়, না হলো রাধার, আমা হটতে। এলোম। আহিনি ওলো সংচরী, রৈল মধুপুরী, রাজা লোলেতে।। শুনে এই কথ , যত োপেসুতা, হ**য়েউন** মত্রা, করে রেশ্বন / কপালে কন্ধণ, করুবে ক্রেপণ, হয় আর্ট তন, গ্যেতিনীগণ।। জ্রিক্সের পারে,দেহ সমর্পিরে, বিক্রীত হইরে, ক্লম্ড নামেছে। কুষ্ণ উপাধ্যান, না হয় বর্ণন कि थिए तहन, सूछ्या मटछ।।

> স্থীদিগের খেদোক্তি। রাগিণী ললিত। তাল কাড়া।

कित्व जटन ला इत्म गार्थत लाविन्म काथात्र। आभाग तहारह आनी आनुनात्य प्रथां उत्तात्र।। वित्न गार्थता जिल्म, देश्या होत्म खल्ल ज्ञम, ना एड्रेसिट्स आन मान, हत्व ला निम्हत।। তৰ जामात পরিশ্বানেতে, বেঁচে আছি এ দশাতে, মিলাও এনে রাধানাথে, ছংখিনীর এ ছংখের সময়। গ্রন্থ

जिल्ही। ब्रमा वटन अधीनन, काम्म किन व्यकातन, কান্দিলে কিন্ত্ৰে বল আর। দূব কর সে ভাবনা, আর শত্রু হাসাওনা, পর নাহি হয় আপিনার।। এবে করহ উপায়, রাধা যাতে শাস্ত হয়। বিহিত করহ সবে ভার। সে বাচিলে ব্রজে রব, লোকেরে মুখ দেখাব, তা না হৈলে সকলি জ্ঞসার।। রুন্দার বচন শুনি, যত গোপের রমণী, নিরস্ত ২ইল সুকলেতে। রুদার লইয়া দক, অনুহাণো দিল ভঙ্গ, উত্ত রিল রাধার কুঞ্জেতে॥ রুন্দার বদন হেরি, হৃটি চিতৃ হয়ে প্যারী, বলে কে প্রাণেব রুদ্দে এলে। কহু ক্চ সমাচার, কি ছইল মথুরার, কার্য্য দিদ্ধি কেমনে করিলে।। কৈ আমার শ্যাম নথা, ত্মি স্থী এলে একা,কোথা বাঁক। সদনমোহন। কি ব্লুলিল প্রাণ হরি, কও ওগ্নো সহচরী, কেনে ভোমার नজল নয়ন।। হানি নাই মুখে হেঁগো, অভিযানী দেখি ধ্বগো, কেন গো এতেক ভিয়মান। চঞ্চলা হরিণী প্রায়, চঞ্চলা দেখি ভোমায়, কি বলিল ব্যঙ্গি নমুন।। মৌনভাবে কেনরও, কথা নাহি কও,নাহি পারি বুঝিতেকারণ 🛚 বুঝি সে লম্পট হরি, তোমারে বঞ্চনা করি, প্রিট,ইল এ ক্রন্ত ভুবন । মাত্রাকালে কি বলিলে, সে কথার কি করিলে, ভাবে বুঝি क्शाल (उटक्र ह । स्भाग्नेवल महहती, त्रम এड लू कां हूर्ति, क्रयः वृक्ति वशःमा करतरह।। अर्थनि वाधात वहन, मृह्येरत कृष्ण। कम, अम अम अर्गा महत्ती। अर्गा भागती कि विनिव, সে কথা কেমনে ক্ব, এলোনাগো তব প্রাণ হরি।। ৩ কথা শুনি অমনি, মুছ্ টেহরে কমলিনী, গড়াগড়ি দেয় ভুমি-ভলে। ঘন ঘন বহু খাস, বাড়ে বিফে্র ছতাশ, বিরহ. कानन छेटठे , कृतन ।। क्वानाय हथाना देश्ट्य, थ्रञ्जन नम्रनी ্ চামে, রহিলেন পুরুলিকা মত। ছিল্ল তরুবর প্রার, ভূমে গুরুতাগড়ি যার, প্রেমজল বহে অবিবত। বেণী একারে পজিল, চন্দানন শুকৃহিল, অধরের থসিল তামূল। নীকামর

धरम शिल, समस्त्राज श्राविमल, कृतकत रेनत्रामा कृती गृत ॥ এমনি প্রেমের বাণ, যারে করয়ে নদ্ধান, বিধিমতে আলার যে তারে। নাহি রহে লজ্জা ভর, ধর্ম কর্মা দূব হয়, সাবাসি नानानि পितिट्डित ॥ धटला थटला देश्द्य धनिः नभा यमम् इतिनी, खटहरूरन इट्टेल मनान । हर्दर (म तुन्ह) सूनक्ती, तानात করেতে ধরি, বলে রাধে করিস্নে রোদন।। আর প্রাণ बाँटामा (११), कान्मिट्स कॅल्माम्टर्न्ट्शा, क्टरम किट्ना हात्राहरू জীবন। কমলিনী ক্ষম্ভ হও, মলেরে প্রবোধ দেও, জার নাহি পাৰে ক্ষণ্ডধন।। পর কি আপান হয়, কেন বার ভাক **छात्रः** सिन्। ४ छा: विष्ठ्षम अनव। क्लान्स आर्थाक करितः, আর কি শানেবে পাবে,ছি মেনেগো হইওলা চঞ্চা। ভূমিতো অবোধ নও, এবে মনেরে বুরাও, পর বে তা পরৈতে জানয়। যে পর্যান্ত জাপনার, কর্মানা চর উদ্ধার, মে পর্যান্ত ছায়া প্রায় রয়।। কার্য্য বিদ্ধি হলে পরে, স্তভাক প্রকাশ করে, পুর্বভাব নাহি করে মনে। দেখ রাই বংশী-ধারী, বাইয়ে গো মধুপুরী, ভোমায় গোল। রাখে স্মরণে।।' বেদীয়ার বাজী প্রায়, পরের গিরিতি হয়, শেষ নাছি রয় ला मजनी। (थनाधुन) इरहरणतनः, शितिरुव त्नय इरना, দক্ষিণান্ত কর কমলিনী। এইৰপে রন্দাদূতী, বুঝায়ে রা-ধার প্রতি, কতমতে সাস্কৃনা করিল। রুন্দার কর্ম শুনি, সে ৰুকভান্ন নাফানী, ত্ৰিভঙ্গ আশাতে ভঙ্গ দিল।। শুন ওছে রাধানাথ, আমার নাহিক নাথ, তুমি জগলাথ জনাদ্দন। দিয়ে হে চরণ তরি, পার কর ভববারি, এ দীনের এই স্বাকিঞ্চন।।

শ্রীকৃষ্ণ বিচ্ছেদের প্রতি শ্রীমতীর উক্তি। রাগিণী বারোঙা। তাল ঠুসরি। শ্যামের বিচ্ছেদ এসোরে, রাখি তোরে অন্তরে। কৃষ্ণ যদি নিদয় হৈল, তোরে আমায় সঁপে দিল, সহজে থাকিতে হৈল, তোমার বশে আমারে। ধ্রঃ। শ্রিপদী। রাধারে সাজুনা করি, শেলুরুদ্ধা সূহুচরী,

জীমতী বসিয়া একাকিনী। ক্লফ বিচ্ছেদের প্রতি, কাত্রা क्रेमा जार्डि, कहिएहर क्रुये विनामिनी।। अत् अक्रुये বিচ্ছেদ, আমার আর কি খেদ, জার মনে কি আঁছে হে স্কুল। আর ফেটনে কেন রই, কেন না বিমুখ হই, সকলিভ হঁষে বয়ে গেল। যার সম্পর্কে তোমার,সঙ্গে সম্পর্ক আমার, সে সম্পর্ক নেভো ঘুচায়েছে। ওব মুখ নাহি চেয়ে, আমারে ভোমায় দিয়ে, ভোমাৰ অধিনী করে গ্রেছে। এবে আর কি **উপায়, আ**য়ণে হৃদরে আয়, আয় তে:রে রাথি **হৃদরেতে।** রে রঞ্না করিল বলে, আমি কিছু দেই ছলে, জনাদর করি-বনা ভোমাতে। এখন আমার ভুমি, ভোমাতে বিক্রীত আমি, হয়েছি হে তোমার অধীন। রাই রাজ্যে রাজা হও কুষ্ণ দত্ত ছত্রনও, ভোগকর থাকি যেকদিন। সাথে কিরে সাঁধি ছোরে, তুমি না থাকিলে পরে, সে সাবেতে অসাধ **হইবে**। তোমার স্বভাব গুণে, সে গুণ হইবে মনে, ভাবিলে ভাবনা ছুরে যাবে॥ তুমি আমার সেই শ্যাম, দেখহে হৈ 🗳-না বাম, দেখ যেন সেরপ ভুলিনে। এই ভিকা তোরে চাই, স্থার আমার কেং নাই, যে আছে সে থাকে যেন মনে। সেই কপ নিরস্তর, অন্তংরতে নিরস্তর, থাকে যেন অন্তর 🖚 হয়। দেখ দেখ মনে রেখ,সেই ভাবলৈয়ে থেক, উপকার ক্রো অসময় । লানি হে অবলা নারী, নাহি জানিত চাতুরী, জ্বাচতুর প্রচুর ৰাপেতে।কেবল প্রেমের বশ, প্রেমেডে করম্বে বশ, বাঁধা থাকি প্রেমের ডোরেছে। দেখ ভার কলা-कत, व्यक्तिरङ रायून। कत, रमस्थ अरलम कनम रद्रत्य। कूर्रंत निहा कालक्ष्मि, जिल्लाम वनमानी, जनहरन चिन मनाश्वरः । क्रयः विष्कृतमत् श्रीक, এक विलास श्रीमकी, क्रयः-क्रा भारतरे ब्रह्मि । इति इति वन मन, वाधाकुक छेेेेेेेेेेेेेेे के म, प्रमुद्र मम्ल हरेन।